सत्यमेव जयते

अभिव्यक्ति

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

53 वां अंक

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का
कार्यालय, पश्चिम रेलवे, मुंबई - 400020

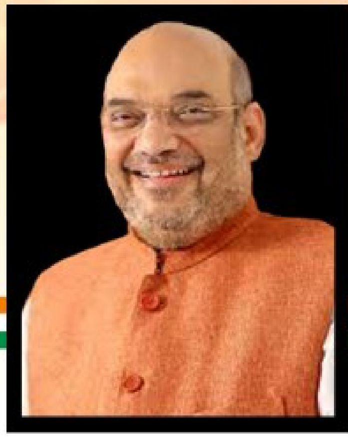

हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

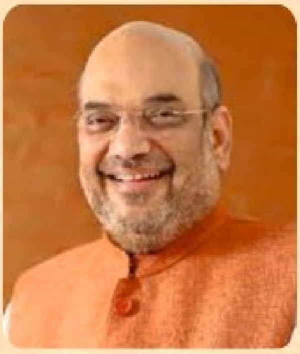

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

आनो नो भद्रा कृतवों यानतु विश्वत:

हमें सभी ओर से कल्याणकारी विचार प्राप्त हों (ऋग्वेद: 1.89.1)

सितम्बर 2025

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्रीमती सुप्रिया सिंह, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

संरक्षक

श्रीमती नीना मोरे, उप निदेशक, पश्चिम रेलवे, मुम्बई

एवं

श्री राजेन्द्रन नायर, उप निदेशक,पश्चिम रेलवे, अहमदाबाद

संपादक

श्रीमती बी.शुभा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

परामर्श दाता मंडल

श्री मुरुगण ए , अध्यक्ष हिंदी समिति एवं वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री शशि भूषण सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री अखिलेश सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री नीरज कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री गौरव गोयल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री पंकज कुमार, डाटा प्रविष्टि प्रचालक

प्रकाशन व्यवस्था

श्री भारत भूषण एवं श्री अशोक बिश्नोई

संपर्क सूत्र: दूरभाष 022-22301189, फ़ैक्स 022-22054338, रेलवे 090-22361

रचनाओं की मौलिकता का उत्तरदायित्व रचनाकारों का है और रचनाओं में दिए गए विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नही है।

****

अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, रेलवे का संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, पश्चिम रेलवे, मुंबई द्वारा वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के नवीन अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता और प्रगतिशील वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के प्रकाशनार्थ उन सभी कार्मिकों का सहयोग सराहनीय है जिनकी रचनाएँ इसकी शोभा बढ़ाती हैं।

आप सभी हिंदी के संवर्धन में अपना बहुमूल्य योगदान देते रहें और इस गृह-पत्रिका अभिव्यक्ति को नई ऊंचाइयों पर ले जाएं।

मुझे आशा है कि गृह-पत्रिका अभिव्यक्ति के माध्यम से सभी कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में कामकाज करने की प्रेरणा मिलेगी।

श्री प्रवीर पांडे
अपर नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक/रेलवे

नराकास अध्यक्ष का संदेश

पश्चिम रेलवे
Western Railway

विवेक कुमार गुप्ता
महाप्रबंधक
Vivek Kumar Gupta
General Manager

सत्यमेव जयते

पश्चिम रेलवे
चर्चगेट, मुम्बई - 400 020
WESTERN RAILWAY
CHURCHGATE, MUMBAI - 400 020

संदेश

यह हर्ष की बात है कि प्रधान निदेशक, लेखा परीक्षा कार्यालय, पश्चिम रेलवे, चर्चगेट मुंबई द्वारा हर वर्ष गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति' का प्रकाशन किया जाता है।

यह कार्यालय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्रीय सरकारी कार्यालय), मुंबई का सदस्य होने के साथ-साथ रेलवे का भी अभिन्न अंग है।

संघ की राजभाषा नीति प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की है। किसी भी कार्यालय में राजभाषा का प्रयोग- प्रसार बढ़ाने में हिंदी पत्रिकाओं का अमूल्य योगदान होता है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में भी हिंदी पत्रिकाओं में जब कर्मियों की लेखनी, फोटोग्राफ, आवश्यक कार्यालयीन जानकारी छपती है तो वह पाठकों के मनः पटल पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ जाती है। जैसा कि इस पत्रिका का नाम ही "अभिव्यक्ति" है तो निश्चित रूप से यह कर्मियों की अभिव्यक्ति को उजागर करती होगी।

इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपूर्ण संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं और आशा है की राजभाषा हिंदी के प्रयोग -प्रसार को बढ़ाने हेतु भविष्य में भी सभी प्रयास किए जाते रहेंगे

जय हिंद !

24/9/2025

(विवेक कुमार गुप्ता)
महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
(केंद्रीय सरकारी कार्यालय), मुंबई

24 सितंबर, 2025
चर्चगेट, मुंबई

संरक्षक का संदेश

यह बहुत खुशी की बात है कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमारे कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका अभिव्यक्ति के नवीन अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। पत्रिका के इस 53 वें अंक को आपके हाथों में सौंपकर मुझे बहुत गर्व का अनुभव हो रहा है।

इस वर्ष 03 अखिल भारतीय राजभाषा कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना और उसमें पहले से भी अधिक लोगों की भागीदारी इस बात का संकेत है कि हिंदी के विकास की दिशा और दशा में उत्तरोतर प्रगति हो रही है। राजभाषा विभाग की ओर से हिंदी शब्दसिंधु, कंठस्थ और भाषिणी जैसे प्रयोगमूलक हिंदी टूल्स की उपलब्धता यह स्पष्ट करती है कि तकनीक का प्रयोग भी राजभाषा को अतिरिक्त संबल प्रदान कर रहा है जोकि आज की इस वैश्वीकरण व्यवस्था में नितान्त आवश्यक जान पड़ता है।

वर्तमान में राजभाषा नीति का अनुकरण करते हुए कार्यालयीन हिंदी में सरल, सहज और सुबोध शब्दों का प्रयोग सुनिश्चित किया जा रहा है ताकि सभी भाषा-भाषी इसमें अपनत्व की एक झलक पा सकें। इसी नीति के अनुपालन के अंतर्गत प्रकाशित की जाने वाली हिंदी गृह-पत्रिकाएं इसे ओर भी परिपक्वता प्रदान करती है जिसमें हमारे कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका अभिव्यक्ति भी अपना अभीष्ट योगादान दे रही है।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों को बहुत-बहुत बधाई जिन्होंने अपनी तमाम कार्यालयीन व्यस्ततांओं के बावजूद इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में अपना योगदान दिया।

आशा है कि 'अभिव्यक्ति' का यह 53वां अंक आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेगा और राजभाषा के संवर्धन में सहायक होगा।

10/9/25

सुप्रिया सिंह
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
पश्चिम रेलवे,मुंबई

संरक्षक का संदेश

'कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी' एक प्रसिद्ध भारतीय कहावत है जो हमारे देश की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को दर्शाती है। इसका अर्थ है कि भारत में हर कुछ किलोमीटर पर पानी का स्वाद बदल जाता है और हर चार किलोमीटर पर भाषा या बोलने का तरीका बदल जाता है। यह कहावत इस बात पर जोर देती है कि भारत एक विशाल और विविधताओं से भरा देश है, जहाँ विभिन्न भाषाएँ, बोलियाँ, और सांस्कृतिक प्रथाएँ पाई जाती हैं।

संविधान की आठवीं अनुसूची में दी गई 22 भाषाओं का प्रयोग कर हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य करना इसी भाषाई विविधता को सदैव संजोए रखने में मील का पत्थर साबित हो रहा है जिसका प्रयोग कर राजभाषा के शब्दकोष में उत्तरोतर प्रगति हो रही है।

इस कार्यालय पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी कार्मिक एक समान प्रशंसा और साधुवाद के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए ढ़ेरों शुभकामनाएं।

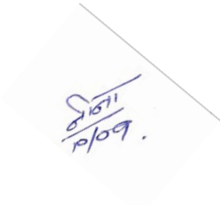

श्रीमती नीना एस मोरे
उपनिदेशक/ चर्चगेट

संरक्षक का संदेश

अभिव्यक्ति अर्थात विचारों को व्यक्त करना यही तो विश्व की हर भाषा का एक मात्र लक्ष्य है चाहे वह इस देश की कोई भाषा हो या सुदूर विदेश की कोई बोली, इस निमित्त उद्देश्य तो एक ही है, मेरे मन के भावों का आपके मन तक सफल संचालन । एक बार किसी की बात आपको आसानी से समझ आ गई तो भाषा सम्प्रेषण पूरा हो गया।

केंद्रीय कार्यालयों में प्रकाशित की जाने वाली गृह-पत्रिकाएं इस दिशा में मील का पत्थर साबित हो रही है जिसमें नाना प्रकार की पृष्ठभूमि से जुड़े कार्मिक अपनी- अपनी विशिष्ट पहचान का परिचय देते हुए केवल एक ही दिशा में बढ़ने का प्रयत्न करते है और वह है- राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करना ताकि आने वाले समय में राजभाषा अपने अधिकृत स्थान को सहजता के साथ प्राप्त कर सके।

इस पत्रिका प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण विशेष आभार के पात्र हैं। मेरी ओर से पत्रिका परिवार को अशेष शुभकामनाएं।

श्री राजेन्द्रन नायर
उपनिदेशक/अहमदाबाद

संपादकीय

आओ कदम बढ़ाए, भाषा से भाषा बढ़ाए – शायद यही वह सिद्धांत है जिससे राजभाषा के विकास में सभी भाषा-भाषियों का योगदान सुनिश्चित करने के लिए भारतीय संविधान ने सभी को अपनी अभिव्यक्ति की आजादी दी है। यह आजादी जहां एक ओर आपको, आपकी अपनी भाषा को सहेजने के लिए प्रेरित करती है, तो दूसरी ओर आपको सांविधानिक दायित्वों के निर्वहन के प्रति भी सजग करती है। यही वह गोल्ड मानक है जो सुनिश्चित करता है कि आपका अधिकार ही आपके दायित्व का दायरा होता है।

सभी भाषा-भाषी नाना प्रकार के कार्यों के चलते एक दूसरे पर निर्भर करते हैं और यहीं से एक बहुभाषी राष्ट्र की संकल्पना जन्म लेती है जिसे भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में अक्षुण्ण बनाए रखना ही किसी भगीरथ कार्य से कम नही है।

केंद्र सरकार की राजभाषा नीति का अनुसरण कर राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए हर संभव प्रयत्न करते हुए कार्यालय गृह-पत्रिकाओं के प्रकाशन के अंतर्गत हमारे कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका के नवीन अंक का प्रकाशन इस दिशा में निरंतर गतिशील रहने का सार्थक प्रयास जान पड़ता है।

पत्रिका प्रकाशन में सहयोग देने वाले समस्त कार्मिकों को साधुवाद एवं शुभकामनाएँ ।

श्रीमती बी शुभा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

विषय-सूची

1.	माननीय गृहमंत्री जी का संदेश	श्री अमित शाह	
2.	अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, रेलवे का संदेश	प्रवीर पाण्डेय	
3.	नराकास अध्यक्ष का संदेश	विवेक कुमार गुप्ता	
4.	मुख्य संरक्षक की कलम से	सुप्रिया सिंह	
5.	संरक्षक का संदेश	नीना एस मोरे	
6.	संरक्षक का संदेश	राजेन्द्रन नायर	
7.	संपादकीय	बी.शुभा	
8.	माँ से दूर माँ के पास	श्रुति अरोड़ा	01-02
9.	राजस्थान, रेगिस्तान एवं पारिस्थतिकी	अशोक बिश्नोई	03-05
10.	मन की स्वच्छता	आभाष कुमार	06
11.	राजभाषा पखवाड़े की झलकियाँ	छायाचित्र	07-10
12.	स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं	शशिभूषण सिंह	11-12
13.	किताबें	नितिन धंधारे	13-14
14.	चलती ट्रेनों से कचरा फेंकने की समस्या	रोहन कटियार	15
15.	छोटे हाथों की बड़ी लड़ाई	अरुण कुमार शुक्ला	16
16.	जीवन का आधार	नेहा चौधरी	17

17.	जोशीमठ -घसता हुआ शहर	जयप्रकाश	18-19
18.	कुम्भलगढ़ -यात्रा वृतान्त	अजित कुमार	20-21
19.	मेरे हिस्सें की बरसात अब सियाचिन में गिरती है	नारायण राठौर	22
20.	राजभाषा एवं राजभाषा में तकनीकी का प्रयोग	शिखा कुमारी	23-24
21.	लेखापरीक्षा-सत्य का प्रकाश	एन.जी. पडवेकर	25
22.	स्कूल के समय की एक सुखद स्मृति	विजय पेडनेकर	26
23.	ऑनलाइन फूड डिलीवरी के सुख-दुख	आशीष कुमार	27
24.	भारतीय नदियों का धार्मिक महत्व और आज की स्थिति	दिनेश खापरे	28-29
25.	हिंदी की ओर लौटते कदम	साक्षी सोलंकी	30
26.	प्रकृति की गोद	प्रकाशचंद मीना	31
27.	मेरी अमरनाथ और वैष्णों देवी यात्रा	पूनमचंद सैनी	32-36
28.	प्रयास	सत्येन्द्र कुमार	37
29.	आओ धरा बचाएं एक पेड़ लगाएं	अरुण कुमार सिंह	38-43
30.	बदलाव की छोटी सी चिंगारी	दिपेश परब	44
31.	भारत के दो स्मारक द्वार एक कहानी दो भिन्न इतिहास	शिल्पी अग्रवाल	45-47
32.	रसायन युक्त भोजन	राहुल कुमार मौर्य	48-49
33.	वाणी	पंकज कुमार	50-51

34.	मन के अंदर का महाभारत	नंदिनी कासारे	52
35.	प्लास्टिक कचरे के निपटान की समस्याएँ	नीरज कुमार	53
36.	बरसात	भारत भूषण	54
37.	उमलिंग ला की साइकल यात्रा	विकास ब्रहमक्षत्रिय	55-56
38.	राजभाषा पखवाड़ा 2024 समापन समारोह आयोजन रिपोर्ट	रिपोर्ट	57-58
39.	राजभाषा पखवाड़ा प्रतियोगिता परिणाम	रिपोर्ट	59-60

"भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है, हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।"

नरेन्द्र मोदी, प्रधान मंत्री

माँ से दूर, माँ के पास

सुश्री श्रुति अरोड़ा
आशुलिपिक/चर्चगेट

मैं अब माँ से दूर हूँ...
चेहरे पर मुस्कान है,
पर दिल से चूर हूँ।
दिन भर की बक-बक किया करती थीं जिनके पास बैठकर,
अब इस भीड़ मे भी चुप रहने को मजबूर हूँ।

मैं अब माँ से दूर हूँ...
मुँह बनाती थीं जिनकी —
घिया, तोरी, टिंडे पर...
आज ढाबे के खाने से
सिर्फ भूख मिटाने पर मजबूर हूँ।
मैं अब माँ से दूर हूँ...
तेरी मौजूदगी मे नाराज़ होकर भी ठंडा खाना खा लेती थी
अब तेरे बिना फीकी लगती गरम गरम हलवा पूरी है,
माँ, ये कैसी आपसे दूरी है।
मैं अब माँ से दूर हूँ...
अब वीडियो कॉल करने के लिए भी
वक्त निकालना पड़ता है...
हाँ, माँ मैं इस क़दर ज़िन्दगी में मग़रूर हूँ।

मैं अब माँ से दूर हूँ...
वो कहती हैं —
"कमी किस चीज़ की है तुम्हें...
मुंबई जैसे बड़े शहर में?"
पर माँ... मैं कैसे बताऊँ कि
तुम्हारी कमी ही हर चीज़ को अधूरा बना देती है।

मैं अब माँ से दूर हूँ...

वो लोरी, वो डाँट, वो सुबह की पुकार...
अब नींद से जागती हूँ —
मोबाइल के अलार्म की मार।

मैं अब माँ से दूर हूँ...
साल भर से ऊपर हो गया है आपसे दूर,
अब ये वक्त भी आदत मे आकर कटने लगा है,
पर आप नहीं तो चेहरा रूखा, अब वज़न भी मेरा घटने लगा है।
तन पर लगी एक छोटी चोट भी आपसे रो रो कर कह देती थी
अब मन पर चुभी बाते भी खुद ही सह लेती हूँ।
मैं एक रात ना बिताया करती थी आपके बिना, अब अलग शहर मे भी रह लेती हूँ,
बेचैन मै भी हूँ यहा पर, हिम्मत मे ज़रूर हूँ,
अपने पैरों पर खड़ी हो गई हूँ, माँ मैं आपका गुरूर हूँ,

पर मैं अब माँ से दूर हूँ...
आपके पास रहकर मेहनत की, अब सुबह बन ठन कर सुबह दफ्तर जाने लगी हूँ,
इंतज़ार था ना इसी बात का, माँ मैं हर महीने कमाने लगी हूँ,
मैं दूर ज़रूर हूँ आपसे, पर आपकी बेटी हूँ ये सबको बताने लगी हूँ,
पास नहीं हूँ क्यूंकी आपकी ज़िंदगी बेहतर बनानी है, मेरी ज़िंदगी की एक ही तो रानी है।

मैं अब माँ से दूर हूँ...

"मैं आज भले ही माँ से दूर हूँ...

पर हर साँस में उनके पास हूँ।।"

और जब भी थक जाती हूँ इस दौड़ में,

बस आँखें बंद करती हूँ —

आपके आशीर्वाद की छाँव में,

एक बार फिर से जी उठती हूँ...

क्योंकि माँ,

मैं दूर हूँ जिस्म से,

पर रूह से तो हर पल आपके पास हूँ।।

राजस्थान, रेगिस्तान और पारिस्थितिकी

श्री अशोक बिश्नोई
कनिष्ठ अनुवादक/अहमदाबाद,

राजस्थान, एक प्रदेश जो अपने में सभी तरह की भौगोलिक अवस्थाएँ समाएं, शायद विश्व का एकमात्र प्रदेश हो जिसमें इतनी विविधताएँ हो। यहाँ एक ओर पश्चिम का विशाल मरूस्थल, मध्य में विश्व की सबसे प्राचीन अरावली पर्वतमाला और पूर्व में हरियाली युक्त मैदानी प्रदेश। राजस्थान का मरूस्थल विश्व का एकमात्र मरूस्थल है जहाँ एक बड़ी आबादी सैंकड़ों वर्षों से निवास ही नहीं कर रही बल्कि समृद्धि के नए आयाम स्थापित कर रही है। यहाँ के निवासियों की जिजिविषा ही थी जिन्होंने इस सूखे रेतीले मरूस्थल में भी सर्वाइवल सुनिश्चित किया।

कहा जाता है कि जितना गहरा राजस्थान के मरूस्थल में पानी है उससे भी कई ज्यादा गहरे यहाँ के लोग है। तमाम विपरीत परिस्थितियों चाहे वह भौगोलिक हो या बाहरी आक्रांताओं से संघर्ष, मातृभूमि से यहाँ के लोगों का लगाव और इनका जज्बा सुई की नोक जितना भी कम नहीं हुआ। प्रदेश के लोगों की लगन, मेहनत और सहनशीलता से यहाँ के लोगों ने बड़ी से बड़ी विषमताओं का भी एकजुटता से सामना किया एवं समन्वय स्थापित किया।

राजस्थान का साहित्य, संस्कृति, धरोहरें पूरे विश्व की सर्वश्रेष्ठ सभ्यताओं में से एक है और किसी संस्कृति का अस्तित्व वहाँ के लोगों के बिना सम्भव नहीं है। पर्यावरण संरक्षण के मामले में राजस्थान आज भी विश्व भर के लिए मिसाल है।

सम्पूर्ण विश्व जहाँ वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण एवं कार्बन इमीशन जैसी समस्याओं से जूझ रहा है वहीं राजस्थान के आज से कई सदियों पूर्व अनेक महापुरूषों ने पर्यावरण संरक्षण की सीख दी।

आज के परिपेक्ष्य में बिश्नोई समाज का उदाहरण दिया जा सकता है जिन्होंने गुरू जम्भेश्वर जी की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए पेड़ों व वन्य जीवों का महत्त्व समझते हुए अपने प्राणों का बलिदान देकर भी वन व वन्य जीवों का इसी सीख के साथ संरक्षण किया। प्रकृति और मानव के बीच के संबंध की इससे बड़ी मिसाल क्या होगी कि आज से लगभग 300 वर्ष पूर्व 1730 ई. में गुरु जम्भेश्वर जी के अनुयायियों ने उनकी शिक्षाओं से प्रेरणा लेते हुए खेजड़ी के वृक्ष की बजाए अपना सिर कटा लेना जरूरी समझा और इसी जज्बे के साथ मारवाड़ क्षेत्र के 363 लोगों ने इसी वचन के साथ अपने प्राणों की आहुति दे दी।

"सिर साटे रूख रहे तो भी सस्तो जाण"

कि एक सारे के बदले अगर एक पेड़ बचता है तो भी इसे सस्ता मानो। इसी त्याग की भावना और मातृभूमि प्रेम के कारण इस प्रदेश के लोगों ने तमाम विषम भौगोलिक अवस्थाओं के बावजूद भी समृद्धता का प्रतीक बना। यह सिर्फ एक समाज या पंथ की भावना नहीं थी बल्कि यहाँ के शासकों चाहे वे किसी भी काल के हो, उन्होंने भी प्रकृति के नियमों के साथ खिलवाड़ नहीं किया। इस प्रकार यह सोच उन महापुरुषों का दृष्टिकोण ही था जिन्होंने मानव और प्रकृति के बीच समन्वय स्थापित किया और प्रकृति संरक्षण को उच्च महत्त्व का विषय माना गया।

इतिहास के पन्नों में ऐसे हजारों नाम मिल जायेंगे जिन्होंने पर्यावरण व वन्य जीवों के लिए बलिदान दिए। इसमें प्रदेश के शासकों चाहे वे किसी भी क्षेत्र के हो, उनके योगदान को झुठलाया नहीं जा सकता। अनेकों राजाओं जैसे जोधपुर महाराजा राव सांतल, राणा सांगा जैसे महान शासकों ने वन व वन्य जीवों के शिकार के विरूद्ध कड़े कानून बनाए।

आधुनिककाल में सन् 1899 ई. का अकाल जो 'छप्पनिया काल' के नाम से प्रसिद्ध है। इस अकाल की विभिषिका ने समस्त प्रदेश को झकझोर कर रख दिया। यह अकाल इतना विभत्स था कि पेड़-पौधे और पशु ही नहीं अपितु मानव भी पानी की कमी से मरने लगे थे। इसी समय बीकानेर के तत्कालीन महाराजा श्री गंगासिंह जी ने राजस्थान के रेतीले धोरे में नहर लाने के निर्णय किया तथा हिमाचल प्रदेश में सतलज नदी के पानी को नहर के माध्यम से पंजाब होते हुए राजस्थान लाया गया जो उस समय में असंभव को संभव करने जैसा था। यह नहर एक क्षेत्र के लिए पानी का स्रोत ही नहीं बल्कि एक वरदान के रूप में आई थी जिसने पूरे क्षेत्र की तस्वीर बदल दी। इस उपलब्धि के कारण ही महाराजा को 'कलयुग के भागीरथ' की उपाधि दी गई।

आजादी के बाद जनता को यह उम्मीद जगी कि प्रदेश के विकास की जो नींव श्री गंगासिंह जी रखकर गये है उसे लोकतांत्रिक सरकार अप्रत्याशित गति प्रदान करेगी, प्रदेश में अवसरों का सृजन होगा एवं खनिजों व कला से परिपूर्ण इस प्रदेश में विकास की नदियाँ बहेगी। परंतु तथाकथित लोकतांत्रिक सरकार ने सैंकड़ों वर्षों की व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने का कार्य किया।

राजस्थान दुर्लभ खनिजों का भंडार है पर आजादी के इतने दशकों के बाद भी कोई भी सरकार प्रदेश में उन खनिजों के शोधन और उनसे किसी भी तरह का उत्पादन करने में सफल नहीं रही है। बस खनिजों का अंधा दोहन किया जा रहा है और प्रदेश को मात्र एक कच्चे माल के स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। लोग आज अपनी व्यथा किसी को सुना भी नहीं सकते क्योंकि जिस पारिस्थितिकी को उन्होंने अपने प्राणों के बलिदान देकर भी बचाया था उसे आज विकास के नाम पर धीमी मृत्यु दी जा रही है।

जो रेगिस्तान की भूमि बिना किसी आधुनिक मशीनरी व सुविधाओं के हर कष्ट को झेल गई आज वहाँ ग्रीन एनर्जी के नाम पर पारिस्थितिकी को तहस-नहस किया जा रहा है। राजस्थान में एनर्जी व उत्पादन की अपार संभावनाएं है, ग्रीन एनर्जी भी उसी में से एक है। पर क्या पुरखों की हजारों वर्षो से संजोई हुई संस्कृति और व्यवस्थाओं की छाती पर कदम रखकर किया गया विकास यहाँ के लोगों या अन्य प्राणियों के लिए लाभदायक होगा। आज राजस्थान की हजारों वर्षों की ओरण भूमि की व्यवस्था (वह भूमि जो प्रत्येक गाँव के पास वन व वन्य जीवों के लिए छोड़ी जाती है) को सौलर की प्लेटों से पाट दिया गया है।

राज्य पशु गोडावण आज विलुप्ति की कगार पर जा चुका है। राज्य वृक्ष खेजड़ी जो करोड़ों लोगों की लाइफलाईन है, जिसको 363 लोगों ने अपने सिर कट जाने पर भी नहीं कटने दिया, वही खेजड़ी आज लाखों की संख्या में काटी जा रही है। दैनिक भास्कर की रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान में ग्रीन एनर्जी के नाम पर 26 लाख पेड़ काटे जा चुके है जिनमें से 60 प्रतिशत खेजड़ी है और अभी 38 लाख पेड़ काटे जाने बाकी है। जो गंगनहर, महाराजा गंगासिंह जी ने प्रदेश की खुशहाली के लिए बनवाई थी आज उसके दोनों तरफ हजारों वर्ग किमी. में सिर्फ सौलर की प्लेट और ऊँची दीवारों पर लगी कँटीली तार ही उपज रही है। तो इस परिपेक्ष्य में आज के लोकतंत्र को बेहतर कैसे माना जा सकता है जो एक प्रदेश के लोगों और वहाँ की पारिस्थितिकी की परवाह किये बिना विनाश के बीज बो रही है।

यह सिर्फ थार के मरूस्थल की ही कहानी नहीं है बल्कि पूरे प्रदेश या पूरे देश की है। जो अरावली विश्व की सबसे प्राचीन पर्वतमाला के रूप में हजारों वर्षों से सीना ताने खड़ी थी आज वही पर्वतमाला अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है। जो अरावली मरूस्थल के विस्तार को रोके खड़ी है जिससे कई नदियाँ निकलती है आज वो नदियाँ बरसाती नालों का रूप ले चुकी है। तमाम कानूनों और सरकारी मशीनरी को बावजूद पहाड़ों से पत्थरों का और नदियों से रेत का खनन रूकने का नाम नहीं ले रहा है।

सरकार और तंत्र को यह समझने की जरूरत है कि विकास के नाम पर पारिस्थितिकी को खत्म करना किसी के भी हित में नहीं है और अगर वो लोग इस बात को समझने को तैयार नहीं है तो उन्हें प्रकृति के विनाश के परिणामों को भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए। सरकार को अपनी पंगु कानुन व्यवस्था को बदलकर कड़े कानून बनाने की आवश्यकता है। ऐसी नीतियाँ बनाने की आवश्यकता है जिससे आने वाली पीढीयों के लिए इस प्रदेश में ही इतने अवसर उपलब्ध हो कि उन्हें आय के लिए अपनी मातृभूमि को छोड़कर अन्य प्रदेशों की ओर पलायन ना करना पड़े।कई सदियों पूर्व महापुरूषों द्वारा बताई गई शिक्षाओं को आज के स्वरूप में आत्मसात करने की जरुरत है। विकास भी आवश्यक है पर अगर यह विकास सर्वांगीण होगा तभी यह प्रदेश अपनी धरोहर व यहाँ के लोग अपने विश्वासों को बचा पाने में सफल होंगे और इसके लिए उन्हें आज के परिपेक्ष्य में जागरूक होने की जरूरत है।

मन की स्वच्छता

श्री आभाष कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/चर्चगेट

हम सभी प्रतिदिन सुबह आधा से एक घंटा ध्यानपूर्वक अखबार पढ़ते हैं। यह सिलसिला वर्षों से चला आ रहा है और आगे भी प्रायः अधिकांश व्यक्तियों के जीवन में यह सिलसिला जीवन पर्यन्त चलता रहेगा। हम अखबार (आज के परिपेक्ष्य में सोशल मीडिया भी उसी श्रेणी में आता है) में दिए गए विषयों के बारे में थोड़ा ध्यान देंगे तो पाएंगे की यह विषय या खबरें सुबह तो ताजा रहती है लेकिन शाम तक बासी हो जाती है। अगले दिन पुनः नया अखबार नई खबरों एवं नए विषयों के साथ आता है, और हम पुराने विषयों एवं खबरों को भूलते जाते हैं। कमोबेश, यह प्रक्रिया हमारे दिनचर्या का अंग बन जाती है। सामान्यत: सुबह की खबरें, महत्वपूर्ण खबरे, शाम तक अपना महत्त्व खो देती और अगली प्रति में उसकी चर्चा तक भी नहीं रहती है।

कभी विचार करें तो पाएंगे कि यह अखबार हमारे पहले से अशांत मन को ओर भी अशांती के हिलोरे देने लगती है और मानो इसे पढ़कर ऐसा जान पड़ता है कि अब जीवन व्यर्थ ही है इस धरा पर, आखिर भगवाल काल्कि अवतार क्यों नहीं ले लेते ।

वहीं, इसकी तुलना में अपने शास्त्रों और ज्ञानवर्धक पुस्तकों के बारे में विचार करते हैं, तो हम पाते हैं कि जब वे लिखे गए, तब भी उनकी बातें ताजा थी और आज वर्षों, दशकों, शताब्दियों तथा सहस्त्र शताब्दियों के बाद भी उतनी ही ताजा हैं और लोग उतने ही ध्यान और उत्साह से इन्हें पढ़ते हैं।

लेकिन उपरोक्त दोनों पर हमारे दिए गए, समय एवं ध्यान पर, गौर करें तो पाएंगे कि अखबार की महत्वहीन खबरों के लिए हम प्रतिदिन इतना अधिक समय देते हैं जबकि ज्ञानवर्धक शास्त्रों के लिए हमारे पास वक्त नहीं होता। हम उन्हें तभी पढ़ते हैं जब वे हमारे किसी न किसी पाठ्यक्रम का हिस्सा हों अथवा उनका पढ़ना हमारे लिए अनिवार्य हो अन्यथा हम उनकी तरफ ध्यान भी नहीं देते है।

वे पाठ वस्तु जो कि अगले दिन रद्दी में चली जाती है, उसको हम प्रतिदिन सुबह-सुबह पढ़ने के लिए बेचैन हो जाते हैं। जबकि वे पाठ्य वस्तु जो अटल सत्य हैं, उसे पढ़ने के लिए हमारे पास समय नहीं होता।

नतीजा, हमारे ज्ञान का स्तर भी वैसा ही होता है, जिसका अगले दिन कोई महत्त्व नहीं होता। इसे और बड़े रूप में देखें तो हमारा जीवन भी वैसा ही महत्वहीन रह जाता। यदि हम अपने पढ़ने की प्राथमिकताओं को पाठ्य के महत्व के आधार पर परिवर्तित कर देते हैं तो जीवन की महत्ता भी परिवर्तित हो जायगी और अन्तोगत्वा हमारा जीवन भी महत्वहीन से महत्वपूर्ण हो जाएगा।

किसी ने सही कहा है कि "आपका ज्ञान जैसा होगा, आपका बखान भी वैसा ही होगा।" अत: हमेशा सजग रहें कि आप अपने को किन विचारों की इनपुट दे रहें हैं क्योंकि जो आउटपुट मिलेगी वो भी उन्हीं का स्वरूप होगी।

"हिंदी है भारत की बिंदी"

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,पश्चिम रेलवे कार्यालय में हिंदी , पखवाड़ा कार्यक्रम 2024 के आयोजन की कुछ झलकियाँ

श्री अशोक कुमार मिश्र, महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे को उपहार भेंट करती श्रीमती सुप्रिया सिंह प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, पश्चिम रेलवे, मुंबई

हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते महाप्रबंधक ,पश्चिम रेलवे

हिंदी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका अभिव्यक्ति के 52वें अंक का विमोचन

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,पश्चिम रेलवे कार्यालय मेंअंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 आयोजन की कुछ झलकियाँ

स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं

श्री शशी भूषण सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/चर्चगेट

अपने झूठे उत्तरदायित्वों से बंधे हैं,
खोखले वादों से लदे हैं।
हमें बस इतनी सी बातों का मलाल है
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं।

अपराधी नहीं हैं अपराधबोधी हैं,
अपने विकास के खुद अवशेषी हैं।
हमें अपनी गलतियों से ज्यादा दूसरों का ख्याल है।
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं।

चेतना तो विशालकाय युक्त है बस चेतनाशुन्य का नामयुक्त है,
सिर्फ डींगे हाँककर अपनी जिंदगी खुशहाल है,
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं।

हे भारतवंशी आज कैसा समय चल रहा है,
मानव अनैतिक भावनाओं में बेकार गल रहा है,
जहाँ देखों वहीं दुनियाभर का बवाल है,
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं।

आज तकनीक जो इतनी बढ़ी है,
बिना रोक-टोक के प्रकृति से लड़ी है,
सच्चाई को कोई स्वीकार करे, यही मलाल है,
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं।

प्रकृति का जो कोई पर्याय नहीं है,
जीवन में गलत कर्मों का न्याय नहीं है,

हमेशा की तरह लगातार अनुत्तार्रत यह सवाल है,
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं

लोगों को गलती करने का चस्का लग गया है,
उत्तरदायित्वहीन होना जीवन जीने का हिस्सा बन गया है,
सच्चाई के साथ चलना ही बेमिसाल है क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं।

हिंदी का सम्मान
देश का सम्मान है।
हमारी स्वतंत्रता वहां है,
हमारी राष्ट्रभाषा जहां है।

किताबें

श्री नीतिन धंधारे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/चर्चगेट

किताबें,
ऊपर से शांत दिखती है वो,
अपने अंदर कई राज छुपाती है वो,
उसे बस खोलने की जरूरत है,
तुमसे गुफ्तगूं करने लगती है वो।

किताबें,
खाली दिमाग को भरती है वो,
बंद जुबान खुलवाती है वो,
जो ताकत से न खुल सके,
दिमाग से वो ताले खोलती है वो।

किताबें,
प्यारी होती है,
बेजुबान होती है,
लेकिन बेजुबानों को बोलना सिखाती है वो,

वो खुद नहीं आती आप के पास,
आपको जाना होगा, उसके पास,
जानने की लिए उसके राज

कोई सालों की जिंदगी लिखता है उसमें,
कोई अनकहे राज लिखता है उसमें,
और कोई गेहरी सी बात लिखता है उसमे,

तुम जो चाहो पढ़ो,
तुम जिस मे चाहो डुबो,
तुम्हारे ज्ञान की भूख को मिटाती है किताबे।

हर क्रांति की शुरुआत जिससे होती है,
वो छुपी छुरी होती है किताबे,
जो तुम्हें झोंपड़ी से महल तक पहुँचा दे,
वो सड़क होती है किताबे।

अंदर अपने तूफानो को दबाके,
ऊपर से बड़ी शांत होती है किताबे।

“हिंदी का सम्मान देश का सम्मान है।”

"चलती ट्रेनों से कचरा फेंकना: रेलवे पर्यावरण प्रबंधन के समक्ष एक गंभीर चुनौती"

श्री रोहन कटियार
लेखापरीक्षक/चर्चगेट

भारतीय रेल, देश की आर्थिक एवं सामाजिक जीवनरेखा मानी जाती है। प्रतिदिन करोड़ों यात्री और हजारों टन माल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचते हैं। इतने विशाल स्तर पर संचालन के साथ-साथ रेल प्रशासन की यह नैतिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी बनती है कि संचालन स्वच्छ, सुरक्षित और सतत हो। हालांकि, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) द्वारा विभिन्न ऑडिट रिपोर्ट्स में यह स्पष्ट रूप से उजागर किया गया है कि चलती ट्रेनों से रेलवे स्टाफ द्वारा कचरा सीधे रेलवे ट्रैकों पर फेंकने की प्रवृत्ति एक गंभीर पर्यावरणीय और प्रणालीगत समस्या बन चुकी है।

पैंट्री कार, एसी कोच, जनरल बोगियों और यहां तक कि ट्रेन के इंजन डिब्बों से भी प्लास्टिक, जैविक और रासायनिक कचरा बिना किसी जिम्मेदारी के पटरियों के किनारे फेंका जाता है। यह प्रवृत्ति कई दृष्टियों से चिंताजनक है। एक ओर यह सीधे तौर पर 'स्वच्छ भारत मिशन' की भावना के विपरीत है, वहीं दूसरी ओर यह रेलवे की स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन नीति की असफलता को भी उजागर करती है।

रेलवे ऑडिट के दौरान यह पाया गया कि अधिकांश ट्रेनों में कचरा संग्रहण के लिए उचित डिब्बे या संग्रह प्रणाली उपलब्ध नहीं है। जहां यह मौजूद भी हैं, वहां नियमित रूप से खाली नहीं किए जाते। कर्मचारियों के पास आवश्यक प्रशिक्षण या जागरूकता का अभाव है, और निगरानी प्रणाली भी बेहद कमजोर है। कई ट्रेनों में, विशेष रूप से लंबी दूरी की एक्सप्रेस और सुपरफास्ट ट्रेनों में, कर्मचारियों द्वारा पैंट्री कार का कचरा स्टेशन पहुँचने से पहले ही ट्रैक पर फेंक दिया जाता है, ताकि ट्रेन रुकते समय कोई निरीक्षण न कर सके।

इस प्रकार की गतिविधियाँ न केवल रेलवे की छवि को धूमिल करती हैं, बल्कि यह पर्यावरण, वन्यजीव और आसपास रहने वाले समुदायों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। प्लास्टिक, रसायन, बायो वेस्ट जैसे कचरे वर्षा जल के साथ बहकर जल स्रोतों को प्रदूषित करते हैं। कुछ मामलों में ये कचरे ट्रैक में फंसकर तकनीकी बाधाएं भी उत्पन्न करते हैं, जिससे सुरक्षा को खतरा होता है।

इस चुनौती का समाधान केवल दंड या दिशानिर्देशों से नहीं होगा। इसके लिए बहु-आयामी दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है—जिसमें रेलवे कर्मचारियों के लिए नियमित प्रशिक्षण, यात्रियों के लिए जागरूकता अभियान, ट्रेनों में अपशिष्ट प्रबंधन उपकरणों की उपलब्धता और नियमित ऑडिट शामिल हों। इसके अतिरिक्त, जैविक कचरे के निपटान के लिए जैव-संवेदनशील तकनीकों जैसे बायोडाइजेस्टर शौचालय और कम्पोस्टिंग यूनिट्स का प्रसार भी आवश्यक है।निष्कर्षतः, स्वच्छ रेलवे, सुरक्षित यात्रा और सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। CAG के लेखा परीक्षणों का उद्देश्य न केवल वित्तीय अनुशासन की समीक्षा करना है, बल्कि पर्यावरणीय एवं प्रशासनिक जवाबदेही को भी प्रोत्साहित करना है। यदि हम भारत को स्वच्छ और विकसित राष्ट्र बनाना चाहते हैं, तो रेलवे जैसे महत्त्वपूर्ण संस्थान में अपशिष्ट प्रबंधन की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

छोटे हाथों की बड़ी लड़ाई

श्री अरुणकुमार शुक्ला
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/चर्चगेट

छोटे-छोटे हाथों में होनी थी किताब,
मगर थमा दी किस्मत ने झाड़ू और हिसाब।
नन्हें कदम जो चलते थे, सपनों की और,
अब चलते है होटलों की धूल भरी ठौर।

स्कूल की घंटी सुनने का सपना रह गया,
रोटी के पीछे बचपन, कही खो गया।
ना खेल,ना कंचे, ना दोस्तों की टोली,
अब बस है काम, थकान और खाली झोली।
कहाँ गए वो अधिकार, जो संविधान ने दिए।

क्यों चुप है वो चेहरें, जो वादे करके जिए।
बालमन है कच्चा, मत तोड़ो इसको,
मत लादो जिंदगी का बोझ इन नन्हें कंधों पर।
समाज की आँखे खोलो , ये अनदेखी न हो,

हर बच्चा पढ़े, बढ़े ऐसी व्यवस्था हो।
चलो बदलें सोच को और साथ निभाएं,
छोटे हाथों में किताबें लौटाएं।

"राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है-अनंत कुमार शेवड़े"

जीवन का आधार

सुश्री नेहा चौधरी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,/वड़ोदरा

ये जो भी आता हर दिन एक वार है,
उसमे मौसम को चढ़ता अलग ही खुमार है।
हां देखा है मैंने चाँद को भी झाँकते मेरी खिड़की से,

ना जाने उसको किसका इंतजार है।
चले जाते हैं पंछी भी वापिस अपने घरो को,
और मेरा बीतता नही इतवार है।

लंबे अरसे से जो चिनी सपनों की दीवार,
शायद उसका गिर जाना ही इकरार है।
गुफ्तगू तारों की कुछ सुनाई नहीं देती,
मगर उनको टिमटिमाते देखना ही प्यार है।

कुहू-कुहू की आवाज़ कानों मे पड़ती है हर शाम,
जैसे मिलने की किसी ने लगाई गुहार है।
हर वक़्त सुनाई देने वाली रोगी वाहन की ध्वनि,
जिंदगी और मौत के बीच लड़ने वाले की पुकार है
।
कहीं से मिल जाए सुकून की सरगम,
एक यही तो इस जीवन का आधार है।
हां कीमती बहुत है वक़्त का हर लम्हा,
इसको खुलके जी लो, बाकी सब बेकार है।

"हिंदी एक भाषा मात्र नहीं है, यह एक एहसास है।"

जोशीमठ: धंसता हुआ शहर

श्री जयप्रकाश
आशुलिपिक/अहमदाबाद

हिमालय की पहरेदारी में बसा जोशीमठ या ज्योतिर्मठ एक पहाड़ी शहर है जो उत्तराखंड के चमोली जिले में ऋषिकेश-बद्रीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग (NH-7) पर समुद्र तल से 6150 फीट की ऊंचाई पर स्थित है जहां हिंदुओं की प्रसिद्ध ज्योतिष पीठ स्थित है। बर्फ की चादर से लिपटे पहाड़, प्रकृति की शांत तबियत, नीला आसमान, कभी बादलों का आवरण तो कभी गुनगुनी धूप का आंनद, पहाड़ों से बहते झरने, जैसे अशांत मन भी यहां आकर लगता हो चहकने। यह शहर एक पर्यटक शहर के रूप में कार्य करता है क्योंकि यह राज्य के अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक एवं पर्यटक स्थानों जैसे बद्रीनाथ, औली, फूलों की घाटी राष्ट्रीय उघान और हेमकुंड साहिब की यात्रा करने वाले लोगों के लिए रात्रि विश्राम स्थल के रूप में कार्य करता है। जोशीमठ को स्वर्ग का द्वार भी कहा जाता है तथा इसका धर्म अधिकार क्षेत्र सम्पूर्ण कौशल देश तक आता है। जोशीमठ भारतीय सशस्त्र बलों के लिए भी बहुत रणनीतिक महत्व रखता है और सेना की सबसे महत्वपूर्ण छावनियों में से एक है। यह शहर उच्च जोखिम वाले भूकंपीय क्षेत्र-V में आता है, और विष्णुप्रयाग (धौलीगंगा और अलकनंदा नदियों का संगम स्थल) से निकलने वाली उच्च ढाल वाली जलधाराएं इस शहर से होकर प्रवाहित होती हैं। इसके साथ ही साथ यह आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार प्रमुख मठों में से एक है, जो हैं: कर्नाटक में श्रंगेरी, गुजरात में द्वारका, ओडिशा में पुरी और उत्तराखंड में बद्रीनाथ के पास जोशीमठ। यहां आध्यामिकता की जड़ें गहरी हैं तथा यहां की संस्कृति भगवान विष्णु की पौराणिकता के इर्द-गिर्द बनी है। जोशीमठ के बारे में अनेक धार्मिक मान्यताएं प्रचलन में हैं, यहां भगवान नरसिंह का मंदिर है, जहां भक्त प्रहलाद ने तपस्या की थी। इस प्राचीन नरसिंह मंदिर में लोगों का हुजुम सालभर लगातार आता रहता है। अनेक देवी-देवताओं के मंदिरों के अलावा यहां कई देवताओं जैसे ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश, भृंगी, ऋषि, सूर्य और प्रह्लाद के नाम पर अनेक कुंड भी हैं, ये तथ्य इस छोटे से पहाड़ी नगर को देश के धार्मिक मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण बिंदु बनाते हैं।

हाल ही में इस प्यारे से पहाड़ी शहर जोशीमठ में तेजी से भू-धंसान के चलते सैंकड़ों भवनों में बड़ी दरारें मिली हैं। आत्मा का ज्ञान यानी अध्यात्म के परमांनद को प्राप्ति करने का सहज, सरल, सुलभ स्थल लेकिन आज प्रकृति के किसी अनजान गुस्से को दर्शा रहा है। हिमालय की गोद में बसे जोशीमठ के धंसने की शुरुआत बताती है कि हमने भौगोलिक दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों की पारिस्थितिक विशेषताओं को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाने की क्षमता खो दी है। धरा की कंपकंपाहट और दरारों ने इसे शायद अशांत होती प्रकृति का आईना बनाकर हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है। जोशीमठ शुरुआत भर है, भविष्य की तस्वीर और भी भयावह है। आशंका इस बात की है कि केवल एक यही शहर ही नहीं, बल्कि आसपास के दूसरे कई गांव या कस्बे भी धीरे-धीरे धरती में समा सकते हैं। निश्चित रूप से यह एक मानवीय त्रासदी है, लेकिन विडंबना यह है कि इस त्रासदी का कारण भी मनुष्य ही है। सच यह है कि हिमालय दुनिया की सबसे नवीनतम पर्वतमाला है।

इसका अर्थ यह है कि इस श्रृंखला के ढलान अस्थिर हैं। ये भुरभुरी मिट्टी से निर्मित ढलाने हैं और भूस्खलन और अपक्षरण की दृष्टि से बेहद खतरनाक समझे जाते हैं। जैसाकि मैंने पहले ही बताया यह पूरा

भूक्षेत्र भूकपं की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील है, उस पर जलवायु परिवर्तन जैसे कारण भी हैं जिनके कारण इस क्षेत्र में असमय और भारी वर्षा की आशंका हमेशा बनी रहती है। निष्कर्ष यह है कि यह बिल्कुल एक भिन्न इलाका है। यह कछार मिट्टी पर बसा भारत का मैदानी इलाका नहीं है, यह भारतीय प्रायद्वीप का भूभाग भी नहीं, जहां कठोर पत्थर पाए जाते हैं, और न यह आल्पस के ढलान हैं जिनकी पर्वतमालाएं दुनिया में सबसे पुरानी हैं। विकास के नाम पर हमने अंधाधुंध रफ्तार में और सोचे-समझे बिना निर्माण का काम किया है। इसका यह मतलब हरगिज नहीं है कि इन इलाकों को सड़क, पानी, नालियों और आवासों जैसी बुनियादी सुविधाओं से दूर रहना चाहिए, बल्कि इसका अभिप्राय यह है कि योजनाओं को सुसंगति और उपयुक्ति की दृष्टि से देखे जाने की आवश्यकता है।

ये निर्माण किस रूप में होने चाहिए, कहां होने चाहिए और किस संख्या में होने चाहिए और इन निर्माणों का क्रियान्वयन सुनिश्चिपूर्ण ढंग से होना चाहिए। इस बारे में विस्तृत रूप से सोचे जाने की जरूरत है। इस बात की आशंका आरंभ से ही थी कि 520 मेगावाट की तपोवन-विष्णुगाढ़ परियोजना जमीन के धंसने का कारण बन सकती है। लेकिन बांध के इंजीनियरों ने इस आशंका को सिरे से खारिज कर दिया था। 2021 से लेकर आज तक इस क्षेत्र में कई बार बहुत तेज बाढ़ आई और भूस्खलन हुए। इन हादसों में न केवल ऋषिगंगा पनबिजली परियोजना बह गई बल्कि करीब 200 लोगों को अपनी जानें भी गंवानी पड़ी। हर एक विनाश ने हमें यही आगाह किया कि सुरंगें, सड़कें और घर बनाने से पहले हम पहाड़ों के अस्तित्व का सम्मान करना सीखें। वास्तविकता तो यह है कि इस इलाके में यह क्षमता प्राकृतिक तौर पर उपस्थित है कि वह अपनी महान नदियों की सहायता से स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन कर सके। इस विषय पर इस इलाके की भौगोलिक संवेदनशीलता के प्रति विशेषज्ञों का दृष्टिकोण दुराग्रहपूर्ण दिखता है। बल्कि यह कहना मुनासिब होगा कि वे प्रकृति पर प्रौघोगिकी का वर्चस्व स्थापित करना और प्रकृति को नए तरीके से दोबारा सृजित करना चाहते हैं।

विकास के नाम पर यहां जो कुछ भी हो रहा है वह अंतत: विनाश ही करेगा। जोशीमठ से पहले एक सड़क बद्रीनाथ और हेमकुंड की ओर जा रही थी, लेकिन अब जोशीमठ को बायपास करके नीचे से एक सड़क बनाई जा रही है। इसके लिए पहाड़ की तलहटी को काटा जा रहा है, डायनामाइट लगाकर विस्फोट किए जा रहे हैं, जिससे चट्टान कमजोर होती जा रही है। परंपरा अनुसार यहां संपूर्ण क्षेत्र के लोगों के जोर से बोलने पर भी प्रतिबंध रहा है ऐसे में डायनामाइट लगाकर सुरंग खोदना और पहाड़ों को काटकर रास्ता बनाना तो घोर अपराध की श्रेणी में आता है। पिछले कुछ दशकों में निर्माण में वृद्धि, पनबिजली परियोजनाओं और राष्ट्रीय राजमार्गों के चौड़ीकरण ने ढलानों को अत्यधिक अस्थिर बना दिया है। विष्णुप्रयाग से लगातार बहने वाली जल धारायें और प्राकृतिक धाराओं के साथ पाई जाने वाली फिसलन अन्य प्रमुख कारणों में एक है। इसका समाधान बड़े पैमाने पर वनीकरण, पेड़ों के कटान पर रोक, पहाड़ की कटिंग और बड़े निर्माण पर रोक, किसी भी तरह के निर्माण पर वैज्ञानिक सलाह जरूरी,

नदी तट पर अतिक्रमण नहीं हो, भूस्खलन संभावित जोन चिन्हित कर ट्रीटमेंट शुरू हों, भूस्खलन से कमजोर हुई संरचनाओं को मजबूती दी जाए और जलनिकासी की उचित व्यवस्था की जाए तथा भूस्खलन क्षेत्र से आबादी को विस्थापित किया जाए। राज्य सरकार को वैज्ञानिक अध्ययनों को भी अधिक गंभीरता से लेने की आवश्यकता है, जो वर्तमान संकट के कारणों की स्पष्ट रूप से व्याख्या करते हैं। तभी राज्य अपनी विकास बाधाओं को खत्म कर पाएगा।

कुम्भलगढ़ : यात्रा वृतांत

श्री अजीत कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/रतलाम

मित्रों के साथ किसी खूबसूरत जगह मे घूमने की बड़ी उत्कंठा थी। विवेक ने साल 2022 यूपीएससी का मेंस लिखा था, बस इसी इंतजार में थे, उसकी परीक्षा खत्म हो और कही भ्रमण का प्रोग्राम बनाया जाये। विवेक, सचिन और मैंने कुंभलगढ़ घूमने का प्लान बनाया। कुणाल को भी एप्रोच किया, लेकिन वो अपने घर पटना मे था इसलिए आ ना पाया। फिर विवेक ने अपने स्कूल के मित्र (आशीष) को बुला लिया क्योंकि घूमने लिए चार लोग होने ही चाहिए हालांकि लोग अकेले भी घूमते है। सचिन और मै ट्रेन से उदयपुर पहुंचे, विवेक राजकोट से आया और आशीष मुम्बई से। हमने उदयपुर मे एक कार हायर करी, हम मे से केवल आशीष को कार चलानी आती थी। उस दौरान बाकी तीन को यह एहसास हुआ कि कार चलाना अवश्य ही आना चाहिये। फिर हम उदयपुर से बेला बसेरा रिसॉर्ट चले आये, यही पर हमे एक रात्रि बितानी थी। रास्ते मे हमे अरावली की खूबसूरत पहाड़िया मिली। बेला बसेरा रिसॉर्ट राजसमंद जिले के काफी आंतरिक इलाके मे है, तकरीबन 3 घंटे मे रिसॉर्ट पहुँचे। रिसॉर्ट बहुत ही खूबसूरत और हराभरा था, वह काफी स्पेशियस और साफ सुधरा भी था। शुरुआती मुलाकात मे ही वहाँ स्टाफ बेहद मृदुल स्वभाव का लगा। हम रिसॉर्ट मे रिफ्रेश हुए, फिर हमे निकलना था कुंभलगढ़ को। कुंभलगढ़ को निकलने से पहले हमने रिसॉर्ट मे ही लंच किया, स्टाफ ने हमे कढ़ी, दाल और भिंडी परोसी। सभी को खाना बहुत ही स्वादिष्ट लगा। तत्पश्चात हम कुंभलगढ़ घूमने के लिये निकले। रिसॉर्ट से कुंभलगढ़ पास ही मे था, केवल आधा घंटा मे गढ़ पहुँच गए। यह किला लगभग 500-600 साल पुराना है और अरावली की दुर्गम पहाड़ियो पर स्थित है। देखकर यह लगा कि, किले पर चढ़ाई करना आसान ना रहा होगा। किला पर किसने कब कब चढ़ाई करी एवं मेवाड़ के सिसोदिया राजपूत राजाओ और मुगलो मे मध्य रकीब के बारे मे अपना अपना ज्ञान झाड़ते रहे। हमने वहां पर बहुत से चित्र खीचे, विवेक और सचिन ने तो किसी खास उद्देश्य के लिए अपने चित्र खिंचवाए। किला पर स्कूल के बच्चे भी आए हुए थे, उनकी मासूमियत और कौतूहल देख के हमे भी बचपन के दिन याद आ गए थे। किला के कमरे की खिड़कियां इस तरह डिज़ाइन थी, ऐसा लग रहा था जैसे कि पंखा चल रहा हो।

यह किला छोटा है पर इसके चारो ओर जो दीवार है, उसकी लम्बाई लगभग 36 किमी है। यह बात हमे एक छोटी बच्ची से पता चली, उसने ही हमे किला के इतिहास और महत्व के बारे बताया। उसने हमारी तस्वीर भी खीची। पूरा गढ़ घूमने के बाद हम लोग शाम 6 बजे रिसॉर्ट आ गए। रिसॉर्ट का वेज और नॉन वेज दोनो खाना बहुत ही लाजबाब और स्वादिष्ट लगा। खाने का लुत्फ उठाने के बाद हमने पूल मे थोड़ी देर नहाया, फिर हम अपने स्थान पर आ गए, जहां हमारे सोने की व्यवस्था थी। अगले दिन हल्दीघाटी दर्रा और एकलिंगजी मंदिर देखने का प्रोग्राम बनाया। अगली सुबह रिसॉर्ट के तालाब के किनारे बैठे थे, तालाब मे अच्छी खासी मछलियां और बत्तख थी। तालाब के पानी मे बत्तख के अंडे भी तौर रहे थे, सचिन ने बत्तख के अंडे का आमलेट खाने की कल्पना की क्योंकि उसे मुर्गी के अंडो से एलर्जी है। उसके बाद हमने नाश्ते मे आलू के पराठे खाए और हल्दीघाटी दर्रा देखने को निकले। दर्रा काफी संकरा और वहाँ की मिट्टी हल्दी जैसे रंग की थी, इसलिए उसे हल्दीघाटी दर्रा कहा जाता है।

इसके ऐतिहासिक महत्व के बारे मे हमे पता ही था, युद्ध की तैयारी के दौरान मुगलो ने वहाँ फूलो के बगीचे लगवाए, जिससे इत्र बनाया जाता था । अभी भी वहाँ वो बगीचे है और इत्र बनाया जाता है। किंतु अफसोस की बात है कि हम में से

किसी को इत्र खरीदने का ध्यान नही रहा। हमारा अगला पड़ाव एकलिंगजी मंदिर था किंतु सौभाग्यवश श्रीनाथजी मंदिर पहुंच गए, यह क्रेडिट विवेक और सचिन को जाता है क्योकि वे दोनो ही गूगल मैप से आशीष को गाइड कर रहे थे। श्रीनाथजी मंदिर के अंदर मोबाइल ले जाना मना था, मैने तो अपना मोबाइल कार मे ही छोड़ दिया था लेकिन बाकि साथी मोबाइल साथ में ही लिए थे। वे डाया धर्मशाला मे मोबाइल जमा करने चले गए। मै मंदिर दर्शन को आगे बढ़ गया , मुझे नहीं पता था कि श्रीनाथजी मंदिर इतना बड़ा होगा। मुझे लगा था कि 5-10 मिनट हो जायेंगे दर्शन लेकिन वहां मुझे ज्यादा समय लगा। दर्शन पश्चात प्रसाद लेकर मै बाहर आ गया। और मित्रो का इंतजार किया, कार के नजदीक जाने का दुस्साहस मैने नही किया क्योंकि हमारी कार जहां खड़ी थी वहां से मंदिर तक का रास्ता छोटी छोटी तंग गलियों से होकर था, अतएव मंदिर से वापस कार तक जाना मेरे लिए आसान ना था। यहां सचिन बहुत तारीफ के काबिल है, उसके नेतृत्व मे हम चारो शीघ्र ही मुश्किल तंग गलियो को पार कर कार तक पहुंचे। सचिन की इस विद्वता पर विवेक ने कहा सचिन रिवर्स इंजीनियरिंग मे भी बहुत उस्ताद निकला। मैने मंदिर से प्रसाद के रूप में खाजा लिया था, वही टके सेर भाजी टके सेर खाजा वाला खाजा। हम पहली बार खाजा खा रहे थे, हम मे से किसी ने भी कभी खाजा नही खाया था, खाजा बहुत स्वादिष्ट लगा। फिर हम एकलिंगजी मंदिर गए, जो कि नाथद्वारा से उदयपुर के रास्ते के पास ही है, यह मंदिर 8वी शताब्दी का है। मेवाड़ के राजा एकलिंगजी भगवान (शिव) की अधीनता मे मेवाड़ पर राज करते थे। एकलिंगजी भगवान के दर्शन पश्चात हम सभी सीधे उदयपुर के लिये निकले।

मेरे हिस्से की बरसात अब सियाचिन में गिरती है...

श्री नारायण सिंह राठौड़
लेखापरीक्षक/लोअर परेल

वैसे तो हर किसी की जिंदगी में यादें होती हैं पर मेरी यादें शायद किसी पुराने गुलदस्ते में रखे सूखे फूलों की तरह हैं जो अब भी महकती हैं, बस थोड़ी बारिश की देर है। एक सादा सा घर, मिट्टी की खुशबू और टीन की छत, जहां हर मोड़ पर बचपन की कहानियां बसी थी और उन सभी कहानियों का सबसे खूबसूरत किरदार था मेरा भाई विक्की - बुआ का बेटा, लेकिन मेरे लिए उससे कहीं ज्यादा।

मैं इकलौता बेटा जरुर था पर कभी अकेला नहीं रहा। जब भी स्कूल की छुट्टियाँ होती तो मेरा भाई नानी के घर जरुर आता। उसका आना जैसे किसी त्योहार का आना होता-बेर के पेड़ से फल चुराना, बारिश में बिना छतरी के मौज करना, एक दूसरे पर पानी उछालना- हमारी दोस्ती की मिसाल बन गया था, वो बरसात, उस बचपन में मिट्टी की सौंधी खुशबू, गर्मियों की छुट्टियाँ, बरसातों में त्योहार सा माहौल बनाती क्योंकि विक्की था मेरा साया, मेरा यार, मेरा भाई।

वक्त ने तो करवट तब ही बदल ली जब घर के पास वाले बरगद के पेड़ के नीचे बैठे मेरा भाई बोला- मैं फौजी बनना चाहता हूँ, मैं हंसा, सोचा शायद मजाक कर रहा है लेकिन वह हल्की मुस्कराहट के साथ बोला- मैं अपने हिस्से की बारिश सरहद की बर्फ में बदल दूंगा। वो बात कहकर नहीं पर अपने दिन-रात की मेहनत और किताबों से दोस्ती करके अपने सपनों की आग को हकीकत में बदलने वाला था।

हाँ, मेरा भाई आज उसी बचपन की हँसी लिए, वर्दी में सियाचीन की बर्फ से ढकी वीरान चोटियों पर तिरंगा लिए खड़ा है। मेरे भाई मुझे आज भी बहुत खुशी होती है कि तु गर्व से सीना ताने देश की हिफाजत कर रहा है लेकिन हमारी खुशियाँ अब अतीत बन गई हैं।

आज नानी का घर शांत है सिवाय छत पर गिरती बारिश की बूंदों की गड़गड़ाहट के। घर के बाहर वह बरगद का पेड़ भी सूख सा गया है शायद साथी की याद में जो इसकी शाखाओं पर चिल्लाया करता था, सच कहूँ तो विक्की गाँव का शांत वातावरण, चाँदनी का हल्का उजाला ,टीन की छत पर गिरती बूँदें अब वास्तव में अतीत का सपना सा बन गई हैं।

अब नानी का घर शांत है पर मेरी यादों में अब भी हँसी गूँजती है वो बरसात, वो बचपन और वो मेरा फौजी भाई।

“भारत माता के माथे पर बिंदी का जो है स्थान
वहीं है हिंदी का सभी भाषाओं में स्थान”

राजभाषा एवं राजभाषा में तकनीकी का प्रयोग

श्रीमती शिखा कुमारी
टंकक/लिपिक/वड़ोदरा

वर्तमान समय आधुनिक प्रौद्योगिकी का समय है। तकनीकी के कारण आज विश्व ग्राम का संकल्पना साकार हो रही है। आज हम घर बैठे हे अपने मोबाइल से हर वो काम कर सकते है जिसको करने के लिए पहले हमे घंटो परिश्रम करना पडता था। कोविड-19 के दुष्प्रभावों से कही न कही हर कोई प्रभावित हुआ है परन्तु इस आपदा के समय ने तकनीकी रूप से हमे बहुत कुछ सक्षम भी बना दिया। आज के इस समय मे राजभाषा कार्यान्वियन का कार्य हो या प्रचार-प्रसार का कार्य, तकनीकी के प्रयोग ने उसे और अधिक सुगम बना दिया है। आज तकनीकी का प्रयोग करके बहुत आसानी से हिन्दी मे कार्य किया जा सकता है एवं अपने कर्मचार्रियो को हिन्दी मे काम करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। भारत को आज़ादी 1947 मे मिली सन् 1950 मे देश का संविधान लागु हुआ। भारतीय संविधान के भाग-17 अनुच्छेद 351 मे यह स्पस्ट रूप से लिखा गया है कि यह संघ का कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी का प्रचार-प्रसार करे, उसका वृद्धि करे जिससे वह भारत की सामसिक संस्कृति की सब तत्वो की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। संविधान मे हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देने के पीछे संविधान निर्माताओ का यही उद्देश था एवं उस समय भी यही महसूस किया गया था कि हिन्दी ही वह भाषा है, जो पूरे भारत को एकता के एकसूत्र मे बांधे रखने मे समर्थ है। राष्ट्रीय एकता तथा अखंडता को ध्यान मे रखकर ही संविधान निर्माताओ ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा के रूप मे स्वीकार किया। पिछले 75 सालो मे देश मे बहुत कुछ बदल चुका है। आज भारत तकनीकी रूप से बहुत ही आगे निकाल चुका है एवं समस्त विश्व मे अपना लोहा मनवा रहा है। तकनीकी ने हिन्दी को भी अछूता नहीं छोड़ा है।

सन् 1975 मे राजभाषा विभाग की स्थापना की गई एवं तब से राजभाषा विभाग ने सदैव ही राजभाषा के उत्तरोतर विकास के लिये कार्य किया है राजभाषा विभाग के दिशा–निर्देशो का अनुपालन करते हुए भारत सरकार के समस्त विभागो ने भी अपने स्तर पर राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा राजभाषा कार्यान्वयन के लिए कार्य किया है एवं मौजूदा तकनीकी को अपनाया है तथा अपने कार्मिको को उसकी जानकारी देते हुए उन्हे हिन्दी मे कार्य करने के लिये प्रेरित करने के उद्देश से प्रयास किया है।

आज ऐसे अनेकों सॉफ्टवेर है जिनका प्रयोग विभिन्न सरकारी कार्यालयो मे हिन्दी मे कार्य करने के लिये किया जा रहा है। हिन्दी मे कार्य करते समय जो सबसे बड़ी समस्या आती है वह हिन्दी टंकण की। हालाकि तकनीकी के विकसित होने से आज टंकण विभिन्न रूपो से किया जा रहा है। जैसे फोनेटिक टंकण, इस्क्रीप्ट टंकण, वॉइस ट्रयपिंग आदि। वर्तमान समय मे जितने भी कम्प्युटर आ रहे है समस्त मे फोनेटिक टंकण पर तो कोई भी कर्मचारी एक घंटे अभ्यास करने के पश्चात हिन्दी टंकण कर पाने मे समर्थ हो जाता है बशर्ते कि उसे हिन्दी भाषा का थोड़ा बहुत ज्ञान हो। इस्क्रीप्ट टंकण जिसका प्रशिक्षण राजभाषा विभाग ,गृहमंत्रालय द्वारा दी जाती है। उसे स्वयं भी निज प्रयासों से सीखा जा सकता है। यह टंकण सीखने के लिए अनेकों सोफ्टवाइर आज इंटरनेट पर उपलब्ध है। इसके पश्चात अगर गूगल वॉइस टाइपिंग की बात आती है, गूगल की ये सुविधा बोलकर हिन्दी टंकण

करने मे बहुत सहायक है इसका प्रयोग करते हुए बहुत कम समय मे अपनी आवाज द्वारा हिन्दी टंकण का कार्य किया जा सकता है।

हिन्दी मे काम करने मे एक और समस्या आती है और वह है अनुवाद की समस्या। वर्तमान समय मे अनुवाद के अनेकों वेबसाइट इंटरनेट पर नि:शुल्क सेवाए प्रदान कर रहे है जिनमे से कुछ निमन्वत   है। गूगल ट्रांस्लेट, माइक्रोसॉफ़्ट ट्रांसलेटर आदि का प्रयोग ऑनलाइन अनुवाद के लिए लिया जा सकता है। एक समय था जब इन ऑनलाइन सुविधाओं का प्रयोग करना और उनसे प्राप्त परिणाम प्रायः अर्थ का अनर्थ कर देते थे पर आज ऐसी स्थिति नहीं है। आज इन सुविधाओं के प्रयोग से प्राप्त परिणाम 80 से 98 प्रतिशत तक आपका काम सही-सही कर देते है, किसी-किसी मामले मे कभी-कभी 100 प्रतिशत तक भी शुद्धता प्राप्त होती है पर फिर भी चुकि यह एक मशीनी अनुवाद है तो इन पर पूरी तरह से निर्भर करना ठीक नहीं है। अंतिम रूप देने से पहले इन वेबसाइटो पर किए गए कार्यो का एक बार अवलोकन तथा आवश्यक संशोधन करना अनिवार्य होता है। राजभाषा विभाग भी नियमित रूप से राजभाषा हिन्दी को सशक्त करने का हर संभव प्रयास कर रहा है। इस वर्ष अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान कंठस्थ- 2.0 का लोकपर्ण किया गया। कंठस्थ स्मृति आधारित मशीनी अनुवाद की सुविधा है जिसको प्रयोग मे लाने के लिये राजभाषा विभाग के साइट पर पंजीकरण कर लॉग-इन करना अनिवार्य है। राजभाषा विभाग यह सुविधा नि:शुल्क प्रदान कर रही है एवं इस सॉफ्टवेयर पर किया गया अनुवाद लगभग पूर्णरूप से सटीक माना जाता है क्योकि यह आपके किये हुए अनुवाद को पुनः आपके सामने प्रस्तुत करता है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय दुवारा हिन्दी सीखने के लिए अनेकों ऑनलाइन- ऑफलाइन प्रशिक्षण चलाये जाते है इसके साथ ही नि:शुल्क हिन्दी सीखने के लिए लीला राजभाषा ऐप, हिन्दी प्रवाह आदि ऐप राजभाषा विभाग दुवारा उपलब्ध करवाये गए जिसका प्रयोग करके कोई भी व्यक्ति अपनी भाषा के माध्यम से हिन्दी भाषा सीख सकता है। यह ऐप गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध होने के साथ-साथ इसे राजभाषा विभाग के साइट पर जाकर भी एक्सेस किया जा सकता है।

इनके अलावा और भी बहुत सारे ऐप्स, ऑनलाइन शब्दकोश आदि आज इंटरनेट पर नि:शुल्क उपलब्ध है जिनका प्रयोग कर हिन्दी सीखी एवं सिखाई जा सकती है, बस आवश्यकता है थोडी सी लगन एवं धैर्य तथा अभ्यास की। राजभाषा हिन्दी आसान है एवं इसे हर किसी को सीखना चाहिए और केंद्र सरकार का कर्मचारी होने से हम सबका यह संवैधानिक दायित्व है कि हम न केवल हिन्दी सीखे बल्कि सीखकर अपने कार्यालय कार्यो मे हिन्दी को व्यवहार मे लाये।

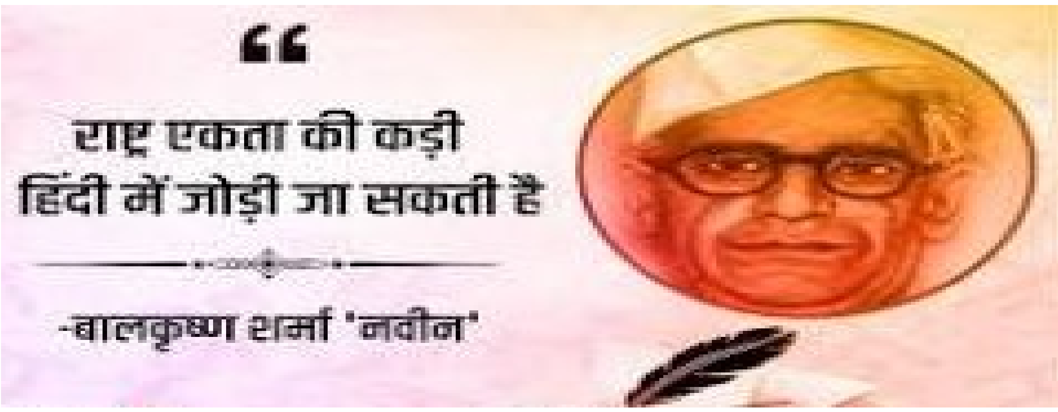

लेखा परीक्षा: सत्य का प्रकाश

श्री नरेश गोविंद पडवेकर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/लोअर परेल

छुपे हुए हर आँकड़े की आवाज है,
लेखा परीक्षा सत्य का आगाज़ है।
आँखों से देखे जो धन का हिसाब,
हर धागे का ढूंढे जवाब।

जहां शासकों की योजनाएं बनती,
वहां जिम्मेदारी की नींव रखती।
हर पाई का हिसाब कराती,
सत्य और पारदर्शिता सिखाती।

न हो कोई गलती, न हो फिजूलखर्च,
हर आंकड़े पर रखे अपनी दृष्टि की मर्च।
भ्रष्टाचार के जाल को काटती,
ईमानदारी की राहें सजाती।

अधिकार और कर्तव्य का है ये गान,
लेखा परीक्षा बनाती राष्ट्र महान।
हर फैसले को देती नयी दिशा,
यह है प्रगति का सच्चा अभिषा।

तो आओ करें इस सत्य का सम्मान,
लेखा परीक्षा से बनेगा देश महान।
हर कदम पर हो पारदर्शिता का उजाला,
भारत बनेगा विश्व में सबसे निराला।

स्कूल के समय की एक सुखद स्मृति

श्री विजय पेडनेकर
कल्याण सहायक/चर्चगेट

दोस्तों, गणित की क्लास चल रही थी, ये आखरी क्लास है। मैं, सोच रहा था कि ये क्लास कब खत्म हो और मैं घर चला जाऊ, और मुझे बहुत भूख भी लगी थी, तभी घंटी बजी और स्कूल के गणित के टीचर ने पढ़ाना बंद कर दिया और कहा , "बच्चों!, आज आपके स्कूली जीवन का यह आखिरी घंटा था, कल तुम्हारा विदाई समारोह आयोजित करेंगे" । जैसे ही हमने यह वाक्य सुना,सभी बच्चों ने जोर से जयकार करना शुरू कर दिया।सभी ने आपस में विचार किया कि कल कौन से कपड़े पहनना चाहिए, टीचर को क्या गिफ्ट देना चाहिए और ऐसी कई योजनाएं दिमाग में कुलबुलाने लगी। लेकिन मैं असंमजस में था कि बस एक बिदाई समारोह और मैं स्कूल से अलग हो जाऊंगा, स्कूल हमेशा के लिए पराया हो जाएगा। कल तक तो यह स्कूल और इसका परिसर मुझे अपना-सा लगता था पर आज यह क्या हुआ कि किसी ने मुझसे यह क्या कहा कि मेरा स्कूल का जीवन समाप्त हो गया है। यह सोचते-सोचते विचारों की उढ़ेड़बुन में, मैं क्लास से बाहर आ गया।मैं क्लास से तो बाहर आ गया था परन्तु भूतकाल की घटनाएँ मेरे दिमाग में दस्तक दे रहीं थी। मुझे मेरा शिशुकाल याद आने लगा... जब मेरी माँ मुझे स्कूल लाने लगती तो मै कैसे रोता था, उस वक्त मेरी माँ मुझे यह कहां अनजानी जगह पर छोड़कर जा रही है, ऐसा जान पड़ता था और आखिर माँ ऐसा क्यों कर रही है। कुछ समय तक तो मैं क्लास की दीवारों को ही ताकता रहता और दीवारे मुझे अजीब से जान पड़ती। कमोबेश क्लास की अधिकांश बच्चों का भी यही हाल था और कोई-कोई तो दहाड़ कर रो भी पड़ता जिसे देखते हुए अन्य बच्चे भी उसे सामूहिक रुदन का रुप दे देते।इस बीच एक महिला मेरे सामने आकर खड़ी हो गई, उसने मेरे सर पर धीरे से हाथ से सहलाया और उस स्पर्श की अनुभूति आज भी रह-रहकर वही स्नेह और वात्सल्य के भाव पैदा करती जो उस समय पर पैदा होते थे। शायद इसे ही महसूस कर मेरी माँ ने विश्वासपूर्वक मेरा हाथ उसके हाथों में दिया था और मेरे दोस्तों उसी दिन से मेरे स्कूली जीवन की शुरुआत हुई थी। धीरे-धीरे स्कूल मुझे अच्छा लगने लगा था।

दरअसल दोस्तों यहां आने के बाद यहां के शिक्षकों ने मुझे शिक्षा का मतलब समझाया, इस मिट्टी के गोले को मूर्ति का आकार दिया। मुझे इश विद्यालय से हर चीज का ज्ञान मिल रहा था, देशभक्ती का पाठ सिखाया गया, गणित ने व्यवहार का ज्ञान दिया, विज्ञान ने प्रगति का मार्ग दिखाया और कई जिज्ञायाएं शांत की, पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से अनेक राष्ट्र-संस्थापकों जैसे कि छत्रपति शिवाजी महाराज, राष्ट्रभक्त संत कवि, महान वैज्ञानिक,लेखक और कवियों के इतिहास को जानने का मौका मिला, शरीर एवं मन को स्वस्थ और सबल बनाने के लिए खेल-कूद को जीवन में शामिल किया। "हम होंगे कामयाब जैसे गीत से जीवन को एक दिशा मिली ।" और आज यकायक सभी कुछ पीछे छुटता जा रहा था दोस्तों, यह वही स्कूल था जिसमें दाखिल होते समय मैं रो रहा था परन्तु आज भी मेरी आंखे बरबस ही छलछला आई थी, यह बात ओर है कि ये आंसु इस बात का प्रतीक हैं कि मुझे इस स्कूल ने बहुत कुछ सिखाया था। सच में स्कूल मुझे बहुत ही प्रिय था काश...

ऑनलाइन फ़ूड डिलीवरी के सुख-दुख

श्री आशीष कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक/अजमेर

1. भूख लगे जब ज़ोर की, और खाना बनाने का ना हो मन,
तब याद आती है फिर हमको, ज़ोमैटो और स्विगी का बटन।
मोबाइल खोला झट से, ऐप पे उंगली दौड़ी,और उस पर देखा कि लिस्ट लगी है थोड़ी।।

2. ऐप से मनपसंद खाना चुन लिया, एड्रेस भी सही डाला,
सोचा बस अब आ रहा, खुशियों का निवाला।
'राइडर पिक-अप कर चुका,' ये मैसेज मोबाईल पर आया,
पेट में चूहे कूदने लगे, दिल भी थोड़ा ललचाया।।
3. मैप पे देखा, राइडर अभी तो दूर है,
4. रास्ते में कहीं घूम रहा, या फिर कहीं मशहूर है।
दस मिनट का था टाइम, अब चालीस मिनट हो गए,
भूख के मारे हम तो, आधे-अधूरे हो गए।।

5. फिर एक और मैसेज आया, 'राइडर आपके पास है,'
उठा-पटक कर भागे हम, ये कैसी आस है।
दरवाज़ा खोला तो देखा, हाथ में थैला भारी,
चेहरे पे मुस्कान थी, जैसे जीत ली हो बाज़ी।।

6. खाना खोला, खुशबू उड़ी, आ गया चैन और सुकून,
सोचा, "यार! इस डिलीवरी वाले पे, काहे को था इतना जूनून?"
कभी आता गरम-गरम, कभी ठंडा पड़ जाता है,
ऑनलाइन डिलीवरी का धंधा, ऐसे ही चलता जाता है।।

7. तो कभी दुख है देर का, कभी खुशी है स्वाद की,
ऑनलाइन फ़ूड डिलीवरी है, ये कहानी हमारी हर रात की।
अगली बार फिर भूख लगेगी, फिर ऐप पे उंगली लगेगी,
ये सुख-दुख की यात्रा, ऐसे ही चलती जाएगी।।

भारतीय नदियों का धार्मिक महत्त्वऔर आज की स्थिति

श्री दिपेश खापरे
वरिष्ठ लेखापरीक्षक/अहमदाबाद

प्राचीन काल से आधुनिक युग तक अगर भारत के इतिहास का अध्ययन किया जाए तो पाया जायेंगा की भारतीय नदियों को केवल जल स्रोत का साधन नहीं, बल्कि आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर के रूप में देखा जाता है। प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता का विकास नदियों के किनारे हुआ है। विशेष रूप से सिंधु, गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी नदियों ने भारतीय जीवन को दिशा दी है।सिंधु घाटी सभ्यता (3300 ईसा पूर्व से) विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक, यह सभ्यता सिंधु नदी के किनारे फली-फूली। यहाँ के लोग कृषि, व्यापार और नगर योजना में उन्नत थे।गंगा और यमुना नदी घाटियाँ वैदिक काल में आर्यों ने गंगा-यमुना के के किनारे में बसकर वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्यों की रचना की। यह क्षेत्र धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना।सरस्वती नदी: वैदिक ग्रंथों में इसका उल्लेख मिलता है, हालांकि वर्तमान में यह लुप्त हो चुकी है। इसे ज्ञान और संस्कृति की नदी माना गया।

यही सब कारण है की हम भारतीयों के लिए नदियाँ सदा ही पवित्र रही है. इतना ही नहीं हमने प नदियों को माँ का दर्जा दिया है, जैसे माँ गंगा, माँ यमुना, माँ नर्मदा। नदियों के किनारे तीर्थस्थल और मंदिर बने, जैसे वाराणसी (गंगा), उज्जैन (शिप्रा), प्रयागराज (गंगा-यमुना संगम)। कुंभ मेला, छठ पूजा जैसे महापर्व नदियों के किनारे ही मनाए जाते हैं।

ये तो हुई हमारी आस्था किन्तु नदिया केवल हमारे लिए कहने मात्र के लिए माता नही, नदिया हर माँ की तरह हमें उसकी ममता के रूप में हमारी कई जरूरतों का भी ध्यान रखती आयी है. जैसे हमारे आर्थिक और सामाजिक विकास में नदियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है जैसे नदियों के जल से सिंचाई और कृषि का विकास हुआ। खेतों की उर्वरता बढ़ी, जिससे जनसंख्या बढ़ी और समाज का विस्तार हुआ। व्यापारिक मार्ग के रूप में नदियों का उपयोग होता था। नावों और जहाजों के माध्यम से माल ढुलाई होती थी। इतना ही नहीं नदियों के किनारे बसे नगर कई स्थापत्य कला, चित्रकला और मूर्तिकला के केंद्र बने. नदी किनारे स्थित ऋषि-मुनियों के आश्रम, जहाँ विद्यार्थी वेद, आयुर्वेद, गणित आदि का अध्ययन करते थे मतलब नदियों के योगदान से शिक्षा और ज्ञान क्षेत्र में भी सारे विश्व भारत अपनी एक अलग पहचान बना।

आज भी इस आधुनिक युग के भागदौड़ भरे ज़िन्दगी से कभी तंग आ कर विचलित हुए मन को शांति अगर चाहिये, तो किसी शांत बहाने बाली स्वच्छ नदी के किनारे पे जाकर बैठेंगे तो आपको आज भी ऐसी शांति के अनुभूति होगी और आपके भीतर चलने वाले द्वन्द शांत होकर आपके भय, निराशा और असुरक्षा की भावना को ख़त्म कर आपको लगेगा की आप सच में अपने माँ के पास बैठे हैI जो आपमें फिरसे जीने का उत्साह भर आत्मा को भी शुद्ध करेंगीI परन्तु आज दुर्भाग्य से हम अपनी इस धरोहर को खोते जा रहे हैI मानव विकास के नाम पर जों औद्योगिक कचरा और मानव गतिविधियों के कारण जिस नदी को हम माँ का दर्जा देते है उसीका आचल हम अपने स्वार्थ के लिए गंदा कर रहे है. (नदियों का जल प्रदूषित कर रहे है) हमें अपनी नदियों की पवित्रता को समझना और उसकी रक्षा करना आवश्यक है हमें यह समझना चाहिए की जिन नदियों ने हमें भरभरकर दिया है आज हम अपनी इन नदियों का अपने अंधविश्वास और भौतिक विकास के चलते उसकी पवित्र धारा को अपवित्र बना रहे है. भगवान् के पर चढ़नेवाले फूल फल और भी कई तरह के चढावो को हम नदियों में बहा देते है. गंगा जैसी

पवित्र नदी को आस्था के नाम पे मैला बनाते जा रहे और कह रहे है की गंगा माँ पाप धुलाती है.

गंगा माँ का पानी पवित्रता लेके आती है परन्तु मनुष्य वास्तविकता में ये समझाना ही नहीं चाह रहा है की उसकी स्वच्छ जलधारा में ही पवित्रता छुपी है

आज हम भारतीयों को, चाहे किसी भी धर्म सी हो या जाती से हमें आपने आस्था के नियम को फिर से एक बार समझना और आवश्यक बदलाव करना होगा साथ ही हम विकास के नाम पर प्रकृति ने जो हमें उपहार स्वरुप चीजे प्रदान की है उसमे नदिया, पहाड़ और हरी भरी धरती दी है. उसे आज हमें संभल कर रखान होगा अन्यथा एक दिन हमारा विनाश का कारन हम स्वयं ही होंगे. हमारी नदिया जो न केवल जल की धाराएँ हैं, वे हमारी संस्कृति, आस्था, जीवन और इतिहास की जीवनरेखा रही हैं। माँ गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी जैसी नदियाँ न सिर्फ खेतों को सींचती हैं, बल्कि आत्मा को भी शुद्ध करती हैं। लेकिन आज ये नदियाँ प्रदूषण, कचरा, रसायन, प्लास्टिक और उद्योगों के अपशिष्ट से जूझ रही हैं। जिन नदियों को हमने "माँ" कहा, आज वही नदियाँ कराह रही है।

नदी बचेगी , जीवन बचेगा

"हिंदी की ओर लौटते कदम"

श्रीमती साक्षी सोलंकी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/चर्चगेट

पढ़ने का शौक मेरे भीतर कब घर कर गया, इसका एहसास ही नहीं हुआ। शायद इसका बीज मेरे बचपन में ही बोया गया था, जब में अपनी माँ को घंटों किताबों में डूबे देखा करती थी। उनके पढ़ने की लगन ने अनजाने में मुझे भी किताबों की दुनिया से जोड़ दिया। चंपक और टिंकल जैसी कॉमिक्स से शुरुआत हुई और फिर, धीरे-धीरे, यह सफर रोआल्ड डॉल और जे. के. रोलिंग जैसे लेखकों की किताबों तक पहुँच गया। इन विदेशी लेखकों की कहानियों ने कल्पनाओं की उडान तो भरवाई , लेकिन कहीं ना कहीं मन को वो अपनापन नहीं मिला जिसकी तलाश हमेशा बनी रही। भावनाएं होती थी,लेकिन वो अपने जैसी नहीं लगती थी। शायद इसीलिए मैं अंग्रेजी साहित्य पढ़ते हुए भी हिंदी के शब्दों को तरसती रही-तब तक जब तक की मेरे पति ने मुझे हिंदी साहित्य से परिचित नहीं कराया।

हिंदी साहित्य से साक्षात्कार मेरे लिए आत्मा को घर लौट आने जैसा अनुभव था। मुंशी प्रेमचंद का गोदान पढ़ते हुए मेरी आँखें भर आई, तो हरिशंकर परसाई की आवारा भीड़ के खतरे पढ़ते हुए हँसी से पेट में बल पड़ गया। महादेवी वर्मा की कविताएँ मुझे एक अद्भुत शांति का अनुभव कराती हैं, जैसे भीतर की कोई हलचल स्थिर हो गई हो और गुनाहों का देवता - वह तो मेरे मन पर एक स्थायी छाप छोड़ गयी है। उस उपन्यास का नाम सुनते ही मन एक गहरी उदासी में डूब जाता है।आश्चर्य होता है कि जिन लेखकों ने कई दशक या सदियों पहले लिखा , उनकी भावनाएँ आज भी उतनी ही ताजगी और तीव्रता से दिल को छू जाती हैं। यही साहित्य की असली सुंदरता है- समय के पार जाकर भी हमें छू सकने की शक्ति। ऐसे कालजयी साहित्यकारों के लिए मेरे मन में अपार सम्मान है।

आज जब हिंदी साहित्य पढ़ती हूँ,तो गर्व से भर जाती हूँ कि यह हमारी भाषा, हमारी मिट्टी और हमारी संस्कृति की देन है। लेकिन उसी के साथ एक पीड़ा भी मन में उठती है – इतनी समृद्ध परम्परा और भावात्मक गहराई रखने वाला साहित्य आज के युवाओं तक ठीक से पहुँच ही नहीं पा रहा है।

मेरी सभी माता-पिता से विनम्र प्रार्थना है कि बच्चों को मोबाइल फोन और स्क्रीन की दुनिया में ले जाने से पहले उन्हें किताबों से जोड़े। उन्हें हमारे भारतीय साहित्य विशेषकर हिंदी साहित्य से परिचित करवाएँ। उन्हें अपने शब्दों, अपनी कहानियों, अपनी भावनाओं से जुड़ने दें। क्योंकि जब एक बच्चा अपनी भाषा के साहित्य को पढ़ता है, तो वब केवल कहानी नहीं पढ़ता, वह अपने अस्तित्व को समझना शुरु करता है।

“हमारी जिम्मेदारी है कि हम इस विरासत को संभालें, बांटे और आगे बढ़ाएं क्योंकि यही साहित्य हमारा है, और हमें इसे जिंदा रखना है।

प्रकृति की गोद

श्री प्रकाश चंद मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/वड़ोदरा

हरी-भरी वादियाँ मुस्कान लुटाती,
नीले अम्बर से धूप छन-छन जाती।

पेड़ों की शाखों पर झूले बहारें,
ठंडी हवा संग गाती फुहारें।

नदी की कल-कल मीठी बानी,
लगती जैसे कोई राग पुरानी।

पक्षी करते मधुर गुंजन,
हर सुबह लाते नया सन्देश बन।

सूरज उगे तो आशा लाए,
चाँदनी रातें सपने सजाए।

पर्वत की ऊँचाई सिखाए गर्व,
धरती की ममता दे अनमोल पर्व।

संभालो इस धरोहर को प्यार से,
वरना खो जाएगी भीड़-भाड़ के शोर से।

चलो प्रकृति से फिर नाता जोड़ें,
हर पेड़, हर फूल से दिल का बंधन जोड़ें।

"हमारी स्वतंत्रता वहां है - हमारी राष्ट्र भाषा जहां है"

मेरी अमरनाथ और वैष्णो देवी यात्रा

श्री पूनमचंद सैनी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/वड़ोदरा

भारतवर्ष की धरती पर अनेक तीर्थ हैं जो मनुष्य को न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि आत्मिक स्तर पर भी शुद्ध करते हैं। इन्हीं पवित्र स्थलों में से एक है *अमरनाथ गुफा*, जहाँ भगवान शिव का हिमलिंग स्वाभाविक रूप से निर्मित होता है। 2024 की मेरी यह यात्रा केवल एक तीर्थ यात्रा नहीं रही, बल्कि यह मेरे जीवन की सबसे *गहन, कठिन, आध्यात्मिक और सौंदर्यपूर्ण यात्रा* थी। इस यात्रा में मेरे साथ मेरे दो निकटतम मित्र भी थे। हमने न केवल अमरनाथ के दर्शन किए, बल्कि श्रीनगर और वैष्णो देवी भी गए और अनगिनत यादें संजो कर लौटे।

अमरनाथ यात्रा की तैयारी – एक जरूरी प्रक्रिया

अमरनाथ यात्रा पर निकलने से पहले कुछ आवश्यक औपचारिकताएँ पूरी करनी पड़ती हैं, जो सरकार द्वारा निर्धारित की जाती हैं ताकि यात्रियों की सुरक्षा और स्वास्थ्य सुनिश्चित किया जा सके।

1. स्वास्थ्य परीक्षण (मेडिकल सर्टिफिकेट)

यात्रा की शुरुआत *किसी मान्यता प्राप्त अस्पताल* या *चिकित्सा केंद्र* से *Compulsory Health Certificate (CHC)* प्राप्त करने से होती है।

- यह प्रमाण पत्र यह सुनिश्चित करता है कि यात्री उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में कठिन यात्रा करने के लिए *शारीरिक रूप से सक्षम* है।
-
- मेडिकल प्रमाणपत्र के बिना पंजीकरण नहीं होता।

2. बैंक से यात्रा पंजीकरण और स्लॉट बुकिंग

- मेडिकल रिपोर्ट के साथ यात्री को *निर्धारित बैंकों* (जैसे: पंजाब नेशनल बैंक, SBI आदि) में जाकर *यात्रा का पंजीकरण* कराना होता है।
- वहाँ यात्री को *यात्रा तिथि (Slot)* और *मार्ग* (बालटाल या पहलगाम) का चयन करना होता है।
- बैंक से पंजीकरण के बाद *यात्रा परमिट (Yatra Permit)* मिलता है, जो यात्रा के दौरान साथ रखना जरूरी होता है।

*3. **यात्रा मार्ग का चयन***

- यात्री को तय करना होता है कि वह **बालटाल मार्ग** से जाएगा या **पहलगाम मार्ग** से।
- बालटाल मार्ग छोटा और तीव्र चढ़ाई वाला होता है, जबकि पहलगाम मार्ग लंबा लेकिन अधिक प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर होता है।

*4. **ट्रेन या फ्लाइट का आरक्षण***

- स्लॉट मिलते ही यात्री को *रेलवे या हवाई यात्रा* की टिकट बुक करनी होती है ताकि निर्धारित तारीख पर जम्मू या श्रीनगर पहुँचा जा सके।
- यह चरण बहुत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यात्रा सीजन में टिकट मिलना कठिन हो जाता है।

12 जुलाई 2024 – वडोदरा से जम्मू की ओर प्रस्थान

हम तीनों मित्र – मैं और मेरे दो साथी – 12 जुलाई को वडोदरा से जम्मू के लिए रवाना हुए। हम सब अत्यंत उत्साहित थे और मानसिक रूप से इस यात्रा के लिए तैयार थे। ट्रेन यात्रा के दौरान हमने भगवान शिव के भजन सुने, यात्रा की योजना पर चर्चा की, और आने वाले रोमांचक अनुभवों की कल्पना की।

13 जुलाई 2024 – जम्मू में विश्राम और पंजीकरण

13 जुलाई को हम जम्मू पहुंचे। यहां हमने अमरनाथ यात्रा के लिए आवश्यक पंजीकरण पूरा किया। जम्मू में श्रद्धालुओं की भीड़ देखकर मन श्रद्धा से भर गया। जगह-जगह 'हर हर महादेव' के जयघोष सुनाई दे रहे थे। यह माहौल हमारे मन को अध्यात्म से भर रहा था।

14 जुलाई 2024 – बालटाल की ओर प्रस्थान

14 जुलाई को सुबह हम *यात्रा जत्थे* के साथ अमरनाथ यात्रा की ओर निकले। जत्थे में सैकड़ों श्रद्धालु शामिल थे और सभी के मन में भगवान शिव के दर्शन की गहरी इच्छा थी। यह यात्रा भावनाओं से भरी हुई थी। रास्ते में सुंदर पहाड़ियाँ, बहती नदियाँ और बर्फ से ढकी चोटियाँ दिखाई देती रहीं। शाम होते-होते हम *बालटाल* पहुँच गए।

बालटाल में ही हमने रात विश्राम किया। ठंड अधिक थी, पर हमारे उत्साह और भक्ति में कोई कमी नहीं थी।

15 जुलाई 2024 – अमरनाथ गुफा के दर्शन

15 जुलाई की सुबह लगभग 4 बजे हम बालटाल से अमरनाथ गुफा के लिए रवाना हुए। यात्रा मार्ग कठिन और ऊबड़-खाबड़ था, पर चारों तरफ बर्फीली घाटियाँ और हर तरफ "बोल बम" के जयकारे गूंज रहे थे। हम चलते रहे, कभी पैदल तो कभी घोड़े की सहायता से।

लगभग दोपहर तक हम *पवित्र अमरनाथ गुफा* पहुँच गए। वहाँ का दृश्य अविस्मरणीय था – एक शांत गुफा के भीतर प्राकृतिक रूप से बनी *बर्फ की शिवलिंग* को देखना दिव्य अनुभूति थी। वहाँ का वातावरण अत्यंत पवित्र और शांतिपूर्ण था। दर्शन के बाद मन को असीम शांति और ऊर्जा का अनुभव हुआ।

दर्शन के पश्चात हम वहाँ से आगे *पंचतरणी* के लिए रवाना हुए। यह स्थान प्रकृति की गोद में बसा हुआ है, जहाँ पाँच धाराओं का संगम होता है। चूँकि हमें वहाँ देर हो गई, इसलिए हम वहीं रात्रि विश्राम करने को विवश हो गए। इसलिए हमने वहीं टेंट में रात बिताई। पंचतरणी में रात बहुत ठंडी थी, लेकिन आसमान में टिमटिमाते तारे और चारों ओर का शांत वातावरण किसी सपने जैसा लग रहा था।

16 जुलाई 2024 – शेषनाग झील और पहलगाम की ओर यात्रा

16 जुलाई को सुबह-सुबह हम *शेषनाग झील* की ओर रवाना हुए। यह झील अत्यंत सुंदर और स्वच्छ जल वाली है। ऐसा लगता है जैसे नीले आकाश का प्रतिबिंब सीधे झील में उतर आया हो। हम चलते रहे, कभी पैदल तो कभी घोड़े की सहायता से। मान्यता है कि यह झील *शेषनाग* से जुड़ी है, जो भगवान विष्णु के शैय्या रूप में माने जाते हैं। इस झील के किनारे बैठकर हमने कुछ समय ध्यान और प्रार्थना में बिताया।

दोपहर के समय हम शेषनाग से *पहलगाम* के लिए निकले। पहलगाम का रास्ता काफी सुंदर और हरियाली से भरा था। यात्रा के इस चरण में हम शारीरिक रूप से थक गए थे, लेकिन मन में संतोष और भक्ति का भाव हमें ऊर्जा देता रहा। शाम को जब हम पहलगाम पहुँचे तो लगा कि हमने जीवन की एक महत्वपूर्ण साधना पूरी कर ली है। यात्रा की थकान के कारण हमने वहाँ रात बिताने का निर्णय लिया।

17–18 जुलाई – श्रीनगर: डल झील और कश्मीर की वादियाँ

17 जुलाई की सुबह हम श्रीनगर के लिए निकले। रास्ते में चिनार के पेड़, बहते झरने, बर्फ से ढकी चोटियाँ और हरे-भरे मैदान देखने को मिले। श्रीनगर पहुँचकर हमने होटल लिया और दो दिन वहाँ रहे।

हमने डल *झील* में शिकारा की सवारी की, *हाउस बोट* में रुके, *निशात बाग*, *शंकराचार्य मंदिर* और *मुग़ल गार्डन* देखे। कश्मीर की वादियाँ सच में "धरती का स्वर्ग" हैं – शांत, सुंदर और आत्मा को छू लेने वाली।

19 जुलाई – श्रीनगर से अनंतनाग और फिर कटरा की ओर

19 जुलाई को हम श्रीनगर से ट्रेन द्वारा अनंतनाग पहुँचे। लेकिन वहाँ से कटरा के लिए सीधी ट्रेन सेवा उपलब्ध नहीं थी, इसलिए हमने टैक्सी बुक की और अनंतनाग से कटरा का यात्रा मार्ग तय किया।

यह रास्ता इतना सुंदर था कि वास्तव में ऐसा प्रतीत हुआ कि हम *स्वर्ग की ओर* जा रहे हों। बादल हमारी टैक्सी से नीचे दिख रहे थे, घाटियाँ हरियाली से भरपूर थीं और रास्ता सर्पाकार रूप में नीचे जाता हुआ – एकदम मनमोहक दृश्य।

20 जुलाई – वैष्णो देवी की चढ़ाई और दर्शन

20 जुलाई की सुबह हम *माता वैष्णो देवी* के दर्शन के लिए भवन की ओर चढ़ाई शुरू की। भक्तों के साथ कदम मिलाते हुए, "जय माता दी" की गूंज के साथ हम लगभग 13 किलोमीटर की चढ़ाई कर भवन पहुँचे।

वहाँ माता के दर्शन कर ऐसा लगा जैसे जीवन की सभी कठिनाइयाँ दूर हो गई हों। हमने अति भक्ति के साथ माँ के चरणों में शीश नवाया और एक रात कटरा में विश्राम किया।

वापसी – कटरा से वडोदरा की ओर

अगले दिन हमने कटरा से वडोदरा के लिए ट्रेन पकड़ी। लौटते समय हमारी आँखों में भगवान शिव, माँ वैष्णो देवी, डल झील की सुंदरता, पंचतरणी की बर्फीली रात और शेषनाग की नीली झील के प्रतिबिंब थे।

यात्रा का अनुभव और आत्मिक प्रभाव

इस पूरी यात्रा में हमें न केवल हिमालय की दुर्गम चोटियों पर चढ़ने का साहस मिला, बल्कि *धैर्य, एकता और श्रद्धा* की असली अनुभूति भी हुई। रास्ते में कई जगह स्थानीय लोगों और यात्रियों से मदद मिली। कोई हमें गर्म चाय पिला रहा था, कोई ठंड में कंबल बाँट रहा था – यह दर्शाता है कि धर्म और सेवा का रिश्ता कितना गहरा होता है।

हर पड़ाव पर "हर हर महादेव" और "बोल बम" के उद्घोष से वातावरण गूंज उठता था, जिससे मन में ऊर्जा भर जाती थी। कई वृद्ध और महिलाएँ भी इस कठिन यात्रा को हिम्मत से कर रही थीं, जिसे देख हमारा आत्मबल और बढ़ता गया।

अमरनाथ यात्रा हमारे जीवन की सबसे अनुपम, कठिन परंतु आध्यात्मिक रूप से समृद्ध यात्रा रही। यह केवल एक धार्मिक तीर्थ नहीं, बल्कि आत्मा को शुद्ध करने वाली *एक आध्यात्मिक यात्रा* है। भगवान शिव के हिमलिंग के दर्शन करना और प्रकृति की गोद में रात बिताना एक ऐसा अनुभव है, जिसे शब्दों में बाँधना कठिन है।

मैं अपने इन मित्रों के साथ यह यात्रा करके धन्य हो गया। यह यात्रा हमारे जीवन का वो अध्याय बन गई है, जिसे हम हमेशा गर्व और भक्ति के साथ याद रखेंगे।

हर हर महादेव!

बोल बम!

प्रयास

श्री सत्येंद्र कुमार
लेखापरीक्षक/चर्चगेट

प्रयास की निरंतरता व्यक्ति को सफल बनाती है।
प्रयास के सततता ही गिरती चींटी को ऊपर उठाती है।
लक्ष्य की आकांक्षा ही व्यक्ति को प्रयासरत करवाती है,
और यही आकांक्षा की दृढ़ता उसे सफल बनाती है।

प्रयास हार को जीत में तब्दील करता है।
प्रयास जंग-ए-सूरत बदल देता है।
यही प्रयास है जिसने प्रताप-शिवाजी को महान बनाया है।
यही प्रयास है जिसने सूरमाओं को विजयी बनाया है।

जन्म से ही कोई सिद्धहस्त नही होता।
प्रयास से ही वह निपुण बनता है।
घटना के परिणाम को परिवर्तित करता प्रयास है।
असम्भव को सम्भव बनाता प्रयास है।

शायद ही जीवन को सार्थक बनाता है प्रयास।
बच्चों को चलना सिखाता है प्रयास।
प्रयास कभी विफल नही होता।
कभी सफलता तो कभी हार की भी सीख देता है।

जड़ को भी चेतन बनाता है प्रयास।
परिवर्तन के अवसर देता है प्रयास।
अनुकूल परिवर्तन की कुंजी है प्रयास।
किसी सफलता की इबारत की नींव है प्रयास।

आओ धरा बचाएं एक पेड़ लगाएं

श्री अरुण कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/अहमदाबाद

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2024 मे विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान का शुभारंभ किया। श्री मोदी ने दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में एक पीपल का पेड़ लगाया। उन्होंने सभी देशवासियों से हमारे ग्रह को बेहतर बनाने में योगदान देने का भी अनुरोध किया है और कहा कि पिछले दशक में भारत ने कई सामूहिक प्रयास किए हैं, जिनसे पूरे देश के वन क्षेत्र में वृद्धि हुई है। श्री मोदी ने कहा कि सतत विकास की दिशा में हमारे प्रयासों के लिए यह बहुत अच्छा है।

धरती, जिसे हम "माता" कहकर पुकारते हैं, जीवन का मूल स्रोत है। यह न केवल हमें हवा, पानी और भोजन देती है, बल्कि सभी जीव-जंतुओं को आश्रय भी प्रदान करती है। आज विकास की अंधी दौड़ में हम प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन कर रहे हैं, जिससे पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। ग्लोबल वार्मिंग, वायु प्रदूषण, जल संकट जैसी समस्याएँ हमारे सामने खड़ी हैं। ऐसे समय में यदि हम धरती को बचाना चाहते हैं, तो पेड़ लगाना सबसे सरल, प्रभावी और ज़रूरी उपाय है।

पेड़ न केवल हमें शुद्ध ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर वातावरण को संतुलित रखते हैं। वे वर्षा को आकर्षित करते हैं, भूमि क्षरण को रोकते हैं और जैव विविधता को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। पेड़ धरती की हरियाली हैं, जो इसे सुंदर, जीवंत और रहने योग्य बनाते हैं।

आज आवश्यकता है कि हम सब मिलकर यह संकल्प लें

–

"एक व्यक्ति, एक पेड़" – यदि हर नागरिक हर वर्ष एक पेड़ लगाए और उसका पालन-पोषण करे, तो आने वाली पीढ़ियों को एक स्वच्छ, स्वस्थ और हरी-भरी धरती मिल सकती है।

विद्यालयों, कॉलेजों, सरकारी एवं निजी संस्थाओं को भी वृक्षारोपण अभियान को अपनाना चाहिए। साथ ही, बच्चों में बचपन से ही पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित की जानी चाहिए।

हम सब यह संकल्प ले कि

आओ धरा को फिर से मुस्कुराना सिखाएँ,
एक पेड़ लगाएँ, हरियाली को लौटाएँ।
धरती माँ की सेवा में यही सच्चा योगदान है,
आओ धरा बचाएँ – यही हमारा अभिमान है।

इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून 2025) के अवसर पर, 'एक पेड़ माँ के नाम 2.0' नामक एक विशेष अभियान शुरू किया गया । यह अभियान प्रधानमंत्री द्वारा शुरू की गई पहल का दूसरा चरण है, जिसके तहत प्रत्येक नागरिक को अपनी माँ या धरती माता के नाम पर एक पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

एक पेड़ माँ के नाम 2.0 अभियान का सार एक प्रतीकात्मक भाव है—अपनी माँ के नाम पर एक पेड़ लगाना। यह सरल कार्य दोहरा उद्देश्य पूरा करता है: जीवन के पोषण में माताओं की भूमिका का सम्मान और पृथ्वी के स्वास्थ्य में योगदान। पेड़ जीवनदायी होते हैं, और एक माँ की तरह, वे अगली पीढ़ी को पोषण, सुरक्षा और भविष्य प्रदान

करते हैं। यह एक प्रयास है जो हमारी मातृभूमि और प्रकृति के प्रति हमारे सम्मान और समर्पण को दर्शाता है। इस अभियान का उद्देश्य माँ के नाम पर एक पेड़ लगाना और एक स्थायी स्मृति बनाना है, जो न केवल पर्यावरण की रक्षा करेगा बल्कि एक हरे और अधिक समृद्ध भविष्य के निर्माण में भी योगदान देगा। माँ और प्रकृति दोनों ही जीवन का मूल आधार हैं और इस पहल के माध्यम से हम अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। "एक पेड़ माँ के नाम" पहल के माध्यम से हम न केवल अपनी माँ के सम्मान में एक स्थायी स्मृति बना सकते हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की महती आवश्यकता को भी संबोधित कर सकते हैं।

पेड़-पौधे प्रदूषण से होने वाले दुष्प्रभावों के प्रति कितने संवेदनशील होते हैं, यह उनमें मौजूद एस्कोर्बिक एसिड के स्तर पर निर्भर करता है. एस्कोर्बिक एसिड का यह स्तर सबसे ज्यादा पीपल में पाया जाता हैI प्राचीन समय से हमारे यहाँ पीपल और बरगद की पूजा होती रही है I वैज्ञानिक रूप से देखें तो उपर्युक्त तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह वृक्ष हमारे लिए कितने उपयोगी हैं I इसी प्रकार से नीम, आम, बेल , कैथा , शीशम इत्यादि पेड़ भी हमें पर्यावरण प्रदूषण से बचाते है इसके अलावा कुछ स्थानीय फसलें जैसे मक्का, अरहर, कुसुम, अलसी आदि भी वायु प्रदूषण के असर को कम करने में कारगर हैं I उपरोक्त सभी पौधे एवं फसलें, एयर पोल्लुशन टॉलरेंस इंडेक्स (APTI) जो कि एक मानक है मैं बेहतरीन प्रदर्शन करते हैं.I

वायु प्रदूषण सहिष्णुता सूचकांक (एपीटीआई) का उपयोग यह आकलन करने के लिए किया जाता है कि पौधों की प्रजातियां वायु प्रदूषण के प्रति कितनी सहनशील हैं I यह सहिष्णु पौधों की प्रजातियों की पहचान करने का भी काम करता है जो प्रदूषण हटाने के लिए उपयोगी हो सकते हैं। एपीटीआई की गणना उन मापदंडों से की जाती है जो वायु प्रदूषकों से प्रभावित होते हैं, जैसे एस्कॉर्बिक एसिड सामग्री, कुल क्लोरोफिल सामग्री, सापेक्ष जल सामग्री और पत्ती के अर्क का पीएच इत्यादि. I इस प्रकार हम देखते है कि APTI वायु प्रदूषण के खिलाफ़ पेड़ों और फसलों की सहन क्षमता का आंकलन करने का टूल है I

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के शोधकर्ताओं ने उपरोक्त पेड़ों और फसलों का विश्लेषण किया है और यह पाया है की ये सभी वायु प्रदूषण के खिलाफ़ अलग अलग प्रतिक्रिया देते हैं I हालिया शोधों से यह पता चला है कि जिन जगहों पर वायु प्रदूषण एक गंभीर विषय है, वहाँ पर ऐसे पेड़ों और फसलों का चयन किया जाना चाहिए जो वायु प्रदूषण के प्रति कम संवेदनशील हों और उसका बेहतर ढंग से सामना कर सकेI

अतः हमे वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए एक बेहतर पर्यावरण अनुकूल रणनीति बनानी पड़ेगी जिसमे नीम, पीपल , शीशम, कीकर, आम और गुलमोहर इत्यादि जैसे पेड़ो को लगाना पड़ेगा

प्रधानमंत्री की पहल पर, केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने 14 जुलाई 2024 को मध्य प्रदेश के इंदौर में रेवती रेंज के सीमा सुरक्षा बल (BSF) परिसर में 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत एक दिन में 11 लाख वृक्षरोपण कार्यक्रम की शुरुआत की। 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत इंदौर ने आज एक दिन में 11 लाख पौधे लगाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया।

वन महोत्सव सप्ताह 2025 वृक्षारोपण गतिविधियों का एक राष्ट्रव्यापी उत्सव है, वन महोत्सव सप्ताह 1 जुलाई से 7 जुलाई तक मनाया जाता है। इस सप्ताह को इसलिए चुना गया है क्योंकि भारत के कई हिस्सों में इस अवधि में दक्षिण-पश्चिम मानसून का अनुभव होता है, जो वनीकरण के लिए अनुकूल स्थिति प्रदान करता है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने यह घोषणा किया कि वन महोत्सव 2025 के दौरान जन्म लेने वाले प्रत्येक नवजात शिशु को 'ग्रीन गोल्ड सर्टिफिकेट' और एक पौधा भेंट किया जाएगा। वह पौधा शिशु का पर्यावरणीय सहचर बनेगा। जैसे-जैसे बालक बढ़ेगा, वैसे-वैसे उसका पौधा भी बढ़ेगा। जब वह किशोर होगा, तब उसे अहसास होगा कि पर्यावरण कोई पाठ्यपुस्तक की बात नहीं, बल्कि जीवन की ज़िम्मेदारी है। यही संस्कार जब बचपन में रोपित होंगे, तभी पर्यावरण की रक्षा स्थायी संस्कार में बदलेगी।

वृक्षारोपण कार्यक्रम केवल सरकार का नहीं है क्योंकि प्रशासन सिर्फ सुविधा उपलब्ध करा सकता है लेकिन किसी अभियान को सफल नहीं कर सकता, इसमें जनता की भागीदारी बहुत ज़रूरी है। जनता इस अभियान से जुड़ कर इसे सफल बना सकती है बरगद, नीम, पीपल जैसे लंबी आयु वाले वृक्षों के साथ साथ अमरुद, मधुकामिनी, करौंदा, बेलपत्र और आंवला जैसे औषधीय गुणों वाले वृक्षों को भी लगा कर हम पर्यावरण को प्रदुषण से बचा सकते है।

प्रकृति का संरक्षण करें,
और प्रकृति हमारा संरक्षण करेगी I
जीवन को सरल बनाएं,
और प्रकृति को फलने-फूलने में मदद करें I
पेड़ लगाएं,
और हमारे ग्रह को हरा-भरा बनाएं।

देश के सभी केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (CAPFs) ने एक लक्ष्य के अंतर्गत मई, 2025 तक 5 करोड़ वृक्ष लगाने का निर्णय लिया था I इसके तहत सभी CAPFs ने मिलकर एक साल पहले ही 5 करोड़ वृक्ष लगाने का लक्ष्य प्राप्त कर लिया। अब तक सभी CAPFs ने 5 करोड़ 21 लाख पौधे लगाए हैं और इस वर्ष के अंत तक 1 करोड़ और पौधे लगाकर कुल 6 करोड़ पौधे लगाने का काम पूरा हो जाएगा।

वृक्ष के महत्व के बारे में मत्स्य पुराण में लिखा गया है कि 10 कुंओं के बराबर एक बावड़ी, 10 बावड़ी के बराबर एक तालाब, 10 तालाब के बराबर एक पुत्र और 10 पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है। आम जान को पौधों के बड़े होने तक उसकी बच्चे की तरह देखभाल करनी चाहिए, बाद में बड़ा होने पर वह माँ की तरह हमारी चिंता करेगा और वायु प्रदूषण के गंभीर खतरों से हमारी रक्षा करेगा

वृक्ष भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। ये न केवल आस्था की छाया हैं, बल्कि हमारी सांसों के साधक भी हैं। अशोक वाटिका में जब देवी सीता विपत्ति में थीं, तब वृक्षों की मूक संवेदना ही उनके दुःख का एकमात्र सहारा बनी।

महाभारत में अर्जुन ने वृक्षों की शीतल छाया में ज्ञान प्राप्त किया। भगवान बुद्ध को बोधि वृक्ष के नीचे आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई, और भगवान महावीर ने साल वृक्ष के नीचे मौन साधना की।

महर्षि अगस्त्य की कुटी बेलों से घिरी रहती थी। महाकालेश्वर स्वयं बेलपत्र की शीतल सांसों से तृप्त होते हैं। प्राचीन प्रयाग में याज्ञवल्क्य ऋषि ने पीपल के नीचे तपस्या की, वहीं मिथिला के विद्यापति ने नीम की छांव में ज्ञान का प्रसार किया।

आज भी भारतीय जनमानस में वृक्षों का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व अक्षुण्ण है—तुलसी में लक्ष्मी का वास माना जाता है, पीपल में विष्णु का, और बरगद की छाया मां के आंचल-सी शीतलता देती है। वृक्ष यहां केवल प्रकृति नहीं, देवता हैं—द्वारपाल हैं—संरक्षक हैं।इसलिए भारत में वृक्षारोपण केवल पर्यावरणीय अभियान नहीं है, यह एक आध्यात्मिक जागरूकता है, एक संस्कार है। यह हरियाली मात्र नहीं, हमारी सांस्कृतिक परंपरा की जीवंत गवाही है।बर्तमान समय में वायु प्रदूषण की समस्या गंभीर रूप धारण कर रही है I इससे मृत्यु दर भी बढ़ रही है लैनसेट प्लेनेटरी हेल्थ जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन में बताया गया है कि दिल्ली सहित देश के 10 शहरों में प्रतिवर्ष हवा में पीएम 2.5 के कड़ों की अधिकता के कारण प्रतिवर्ष लगभग 33,000 लोगों की मौत हो रही है इसमें अकेले राजधानी दिल्ली में 12,000 लोगों की जान जा रही है जो प्रतिवर्ष होने वाली कुल मौतों का 11.5% है इसी प्रकार वाराणसी में कुल मौतों का 10.2% कोलकाता में 7.3% पुणे अहमदाबाद हैदराबाद मुंबई आदि में लगभग 6% मौतें इस कारण से हो रही है हालिया रिपोर्ट में दिल्ली को विश्व का सबसे प्रदुषित शहर बताया गया

है पीएम 2.5 का प्रमुख स्रोत में वाहनों का ईंधन जलने से निकलने वाला धुंआ ,औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला धुआं शामिल हैं वायु प्रदूषण को कम करना वर्तमान में एक राष्ट्रव्यापी चुनौती बन गई है I कम प्रदुषित माने जाने वाले शहरों में भी वायु प्रदूषण के कारण मृत्यु दर में काफी बढ़ोतरी हो रही है Iपौधे हमारे लिए कई प्रकार से उपयोगी हैंI क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र (आरएमआरसी) गोरखपुर के शोधार्थियों ने हाल ही में अपने खोज में 12 औषधीय पौधों के अर्क से 6 ऐसे तत्वों की पहचान की है जो ड्रग रेसिस्टेंट बैक्टीरिया को समाप्त करने में सक्षम है I प्रमुख औषधिय पौधों में शामिल हैं -आंवला, मुलेठी, सप्तपर्णी ,खस , नीम , सर्पगंधा, अश्वगंधा, अनार,सहजन, गुलमेहंदी आदि I इनमें 150 ऐसे तत्व मिले हैं जो ड्रग रेसिस्टेंट बैक्टीरिया से लड़ने में एंटीबायोटिक्स की क्षमता को 256 होगा बढ़ा देंगे इसमें तुलसी के पौधे में पाए जाने वाले मुख्य अवयव यूजीनॉल और आंवले में पाए जाने वाला डेलीक एसिड हमारे लिए काफी उपयोगी साबित हो रहे हैं I यह क्रांतिकारी शोध यूरोप के अंतरराष्ट्रीय जर्नल केमिस्ट्री इन बायोडाइवर्सिटी पत्रिका के फरवरी 2024 अंक में प्रकाशित किया गया है

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 12 प्रकार के ड्रग रजिस्टेंट बैक्टीरिया की सूची जारी की है इनमे मौजूद ड्रग रिसेप्टर, एंटीबायोटिक के संपर्क में आते ही उसे पहचान कर निष्क्रिय कर देता है परिणामस्वरूप एंटीबायोटिक का असर कम हो जाता है I इन पौधों के अर्क से न केवल ड्रग रजिस्टेंट बैक्टीरिया को समाप्त करने में सहायता मिलेगी अपितु मौजूदा एंटीबायोटिककी क्षमता भी 256 गुना बढ़ जाएगी

पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व हमारी संस्कृति में पहले से ही बताया गया है इसी के अंतर्गत हिंदू धर्म में पंचवटी, पंचगव्य, पंचामृत आदि का बहुत ज्यादा महत्व माना गया है. हिंदू मान्यता के अनुसार 'पंचानां वटानां समाहार इति पंचवटी' अर्थात एक ऐसा पवित्र स्थान जहां पर पांच तरह के पवित्र पौधे एक साथ लगे हुए हों I पंचवटी में कुल पांच पेड़ होते हैं, जिसमें पीपल, बेल, आंवला, बरगद और अशोक शामिल है I इन पांच पेंड़ो में बेल का पेड़ जहां भगवान शिव की साधना से जुड़ा है तो वहीं पीपल, बरगद, आंवला भगवान श्री विष्णु की पूजा से जुड़ा हुआ है. पंचवटी वाटिका लगाने के इतने फायदे हैं, कि आपके बच्चे पर्यावरण से कभी वंचित नहीं होंगे

पर्यावरण की रखवाली,
घर घर हरियाली I
लाये समृद्धि और खुशहाली II

अगर धरा को बचाना है I
समाज परिवार और परंपरा की त्रिवेणी को अहं भूमिका निभाना है II

पंचवटी के अंतर्गत आने वाले पौधों व् उनसे होने वाले लाभ का संक्षिप्त विवरण निम्नवत है-

आंवला का पेड़ प्रकृति के लिए अमृत का काम करता है आंवला को अमृतफल भी कहा गया है मिट्टी की उर्वरता और संरचना को बेहतर बनाने व कटाव रोकने और जल संसाधनों को संरक्षित रखने में आंवला का बहुत ही योगदान है आयुर्वेद में आंवला को अत्यधिक स्वास्थवर्धक माना गया है यह विटामिन सी का सर्वोत्तम प्राकृतिक स्रोत है आम तौर पर विटामिन सी गर्मी के प्रभाव से नष्ट हो जाता है लेकिन आंवले में विद्यमान विटामिन सी कभी नष्ट नहीं होता आंवला चर्बी घटाकर मोटापे को दूर करता है हमारी सनातन संस्कृति में आंवला का फल और पेड़ दोनों ही पूजनीय है आंवले में भगवान विष्णु का वास माना जाता है और ऐसी मान्यता है कि आंवले के नीचे भोजन पकाकर खाने से रोग दूर हो जाते हैं

इसी प्रकार बेल का पेड़ वन्य जीवों के लिए आवास और भोजन उपलब्ध कराकर पारिस्स्थतिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसकी गहरी जड़ मिट्टी के कटाव को रोकने में मदद करती है और इसकी पत्तियाँ कार्बनिक पदार्थों के अपघटन में योगदान देती है जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ती है I गर्मी के मौसम में बेल का रस हमारे शरीर को ठंडक पहुंचाता है और शरीर को डिटॉक्स करता है I

बरगद या वट वृक्ष का पेड़ वातावरण में सबसे अधिक ऑक्सीजन छोड़ने वाले पौधों में शामिल हैI इसके साथ ही इसके पत्तियों में कार्बन डाइऑक्साइड सोखने की अद्भुत क्षमता होती है इसी कारण से यह पर्यावरण में संतुलन बनाए रखने के लिए बहुत ही आवश्यक है I इसे सबसे अच्छा पर्यावरण मित्र कहा जाता है I इस वृक्ष की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें पूरी जैव विविधता पनप सकती है I इस पर चींटी से लेकर अलग अलग प्रकार के पक्षी अपना बसेरा बना लेते हैं I

आम फलों का राजा है I यह पेड़ एक स्वादिष्ट फल देने के साथ साथ कार्बन डाइऑक्साइड गैस को बड़ी मात्रा में अवशोषित भी करता है I इसके साथ ही साथ अच्छी मात्रा में ऑक्सीजन का उत्पादन करता है I इसका वृक्ष अत्यंत उपयोगी, दीर्घजीवी , सघन तथा हितकारी होता है I इस पेड़ की जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकने में सक्षम है आम के पेड़ का सतही क्षेत्रफल, फल देने वाले अन्य पेड़ों की तुलना में बहुत बड़ा होता है I इसलिए यह कार्बन डाइऑक्साइड अधिक मात्रा में अवशोषित करता है इसके औषधीय लाभ भी है इसकी पत्तियाँ रक्तचाप को कम करने में मदद करती है क्योंकि इनमें हाइपोटेंशन गुण होते हैं ये रक्त वाहिकाओं को मजबूत करती है इसके साथ ही ये वैरिकाज़ नसों के इलाज में भी प्रभावी है I

उपरोक्त फायदों को ध्यान में रखते हुए हमें संकल्प लेना चाहिये कि अपने जीवनकाल में एक पंचवटी (Panchvati) स्थापित जरूर करें और ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रेरित करें। इस वर्ष राजस्थान में गर्मी ने 125 वर्षों का रिकोर्ड तोड़ दिया, तापमान 52 डिग्री हो चुका है। छत्तीसगढ़ (Chhattisgarh) में अभी तक तापमान 49 डिग्री तक पहुंच चुका है। राजधानी दिल्ली और देश के अन्य कई नगरों का कमोबेश ऐसा ही हाल रहा है I अभी भी नहीं संभले तो फिर बहुत देर हो जायेगी और पृथ्वी को आग का गोला बनते देर नहीं लगेगी तो आपसे अपील है कि आज से अभी से शुभ कार्य की शुरूवात करें।

प्रधानमंत्री मोदी जी का मानना है कि हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए आगे देखने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि दुनिया में जिस तरह से विकास हो रहा है उसे देखते हुए आज सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चिंता का माहौल है। प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा शुरू किया गया 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान जलवायु परिवर्तन की समस्या का सटीक जवाब है।

सम्पूर्ण भारत में कुल फॉरेस्ट कवर का 12% मध्य प्रदेश में है I मध्य प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 31 प्रतिशत फॉरेस्ट कवर है, इसीलिए इसे देश का फेफड़ा कहा जाता है और यह पूरे भारत को आक्सीजन देने का काम करता है। इसके कारण यहां इससे संबंधित कई प्रकार की पर्यटन गतिविधियों में भी बढ़ावा हुआ है। मध्य प्रदेश में 6 टाइगर रिजर्व, 11 नेशनल पार्क, 24 अभ्यारण्य हैं इस सूचि में हाल ही में कूनो टाइगर रिज़र्व भी शामिल हो गया है जिसमे भारत में विलुप्त हो चुके चीते लाये गए है जिससे हमारे पर्यावरण को फायदा होगा।

हमारी सारकार ने हालिया वर्षों में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर के अनेक इनीशिएटिव लिए हैं। पेट्रोल और डीजल में 20% एथेनॉल ब्लैंडिंग को परमिशन दी गई है और 2025 तक पूरे भारत में पेट्रोल और डीजल में 20% की ब्लेंडिंग की योजना है I इसके साथ ही बायोमास को बायोफ्यूल बनाने के लिए 12 से ज्यादा रिफाइनरी स्थापित की गई हैं, ग्रीन हाइड्रोजन मिशन के तहत 20000 करोड़ रूपए का कार्यक्रम तैयार किया गया है। इसके साथ ही पर्यावरण की सुरक्षा के लिए गोवर्धन स्कीम और नेशनल एडैप्टेशन फंड फॉर क्लाइमेट चेंज की भी शुरूआत की है।

भारत सरकार और प्रधानमंत्री मोदी जी ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में G-20 में वन अर्थ वन फैमिली वन फ्यूचर और ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस जैसी कई पहल कीं जिसके चलते संयुक्त राष्ट्र ने मोदी जी को चैंपियन ऑफ अर्थ के पुरस्कार से सम्मानित करने का काम किया।

इस क्षेत्र में अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है चुनौतियाँ बड़ी है

पर्यावरण का रखें ध्यान I
तभी बनेगा देश महान II
पर्यावरण है हम सबकी जान I
इसलिए करो इसका सम्मान II
आओ एक पुण्य दान करें I
पेड़ लगाकर महान बने II
पर्यावरण का करो संरक्षण I
नहीं तो प्रदूषण कर लेगा मानवता का भक्षण II
साँसे हो रही हैं कम I
आओ पेड़ लगाएं हम II
आओ पेड़ लगाएं हम I

देश की शान है हिंदी, देश की पहचान है हिंदी, क्योंकि हर भारतीय के दिल में विराजमान हैं ‘ हिंदी ‘

बदलाव की छोटी सी चिंगारी

श्री दिपेश परब
लिपिक/चर्चगेट

कहा जाता है कि बदलाव बड़े-बड़े निर्णयों से नहीं, बल्कि छोटी-छोटी पहल से शुरू होता है। जैसे एक दीपक अंधेरे को चुनौती देता है, वैसे ही एक सकारात्मक सोच भी समाज की दिशा बदल सकती है।

हम अक्सर सोचते हैं कि हमारे अकेले के प्रयास से क्या होगा। लेकिन इतिहास साक्षी है—हर बड़ी क्रांति की शुरुआत किसी एक व्यक्ति की सोच, एक सवाल, या एक प्रयास से हुई है। महात्मा गांधी का चरखा, स्वामी विवेकानंद का शिकागो भाषण, या किसी किसान का खेत में नई तकनीक अपनाना—ये सभी बदलाव के बीज थे, जो आगे चलकर वृक्ष बने।

दैनिक जीवन में हम कई छोटे अवसर खो देते हैं—किसी की मदद करना, सड़क पर कचरा न फैलाना, पानी और बिजली बचाना, या बच्चों को ज्ञान बांटना। ये सब सुनने में मामूली लगता है, लेकिन इनके प्रभाव की लहरें दूर-दूर तक जाती हैं।

बदलाव का दूसरा पहलू धैर्य है। हर पौधा रातों-रात पेड़ नहीं बनता। कुछ बदलाव तुरंत दिखते हैं, कुछ सालों बाद असर करते हैं। यही कारण है कि निरंतरता और विश्वास जरूरी हैं।

अगर हममें से हर व्यक्ति रोज़ केवल एक सकारात्मक कार्य करने का संकल्प ले—चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो—तो समाज की तस्वीर बदल सकती है। हम अपने कार्यस्थल, घर, और मोहल्ले को बेहतर बना सकते हैं।

अक्सर लोग कहते हैं कि “आजकल कौन दूसरों के लिए समय निकालता है? लेकिन सच्चाई यह है कि समय तो हमारे पास हमेशा होता है, बस हम प्राथमिकताएं अलग रखते हैं। सुबह ऑफिस जाते समय किसी बुज़ुर्ग को सड़क पार कराने में जो पाँच मिनट लगेंगे, वह शायद आपके दिन का सबसे सुकूनभरा पल बन जाए।

बचपन में हम सबने पतंग उड़ाई है। पतंग का छोटा सा धागा उसकी दिशा तय करता है। ठीक वैसे ही, हमारे छोटे-छोटे कर्म हमारे समाज की दिशा बदल सकते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि हमें वह धागा मजबूती से और सही दिशा में थामना होगा।

अंततः, बदलाव कोई गंतव्य नहीं बल्कि एक यात्रा है। इस यात्रा में हर कदम मायने रखता है। और याद रखिए—एक चिंगारी भी पर्याप्त है, अगर उसमें रोशनी फैलाने का इरादा हो।

"समय की पाबंदी—छोटा कदम, बड़े बदलाव की शुरुआत।"

भारत के दो स्मारक द्वार: एक कहानी, दो भिन्न इतिहास

श्रीमती शिल्पी अग्रवाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/चर्चगेट

कभी-कभी दो चीज़ें नाम या रूप में एक-दूसरे से इतनी मिलती-जुलती होती हैं कि लोग उन्हें एक समझ बैठते हैं। भारत के दो प्रसिद्ध स्मारक — मुंबई का गेटवे ऑफ इंडिया और दिल्ली का इंडिया गेट — बिल्कुल ऐसे ही हैं। नामों में समानता, भव्य रूप-रंग… लेकिन इनकी कहानियाँ, उद्देश्य और भावनाएँ बिल्कुल अलग हैं।

मुंबई का गेटवे ऑफ इंडिया: स्वागत और विदाई का प्रतीक

सन् 1911 की बात है। ब्रिटेन के राजा जॉर्ज पंचम और रानी मैरी भारत आए। उनके सम्मान में मुंबई के समुद्र किनारे एक विशाल स्मारक बनाने का विचार हुआ — ऐसा द्वार जो भारत में उनके भव्य स्वागत का प्रतीक बने। लेकिन जब वे आए, तब यह भव्य द्वार हकीकत में मौजूद नहीं था—सिर्फ एक कागज़ का मॉडल था। असली निर्माण 1915 में शुरू हुआ और 1924 में पूरा हुआ। ब्रिटिश वास्तुकार जॉर्ज विटेट ने इसे इंडो-सरसेनिक शैली में डिज़ाइन किया, जिसमें हिंदू और मुस्लिम वास्तुकला का सुंदर मेल है। सुनहरी-पीले बेसाल्ट पत्थरों से बना यह लगभग 26 मीटर ऊँचा द्वार, समुद्र की ओर मुख किए, मानो आने-जाने वालों का स्वागत कर रहा हो।

गेटवे ऑफ इंडिया ने कई ऐतिहासिक क्षण देखे, लेकिन सबसे यादगार दिन था 28 फरवरी 1948। भारत की आज़ादी के बाद, ब्रिटिश सैनिक इसी द्वार से हमेशा के लिए भारत छोड़कर चले गए। वह पल मानो स्वतंत्रता का द्वार भी बन गया।

गेटवे ऑफ इंडिया का डिजाइन एक स्मारक द्वार जैसा है जिसमें बीच का मध्य भाग ऊँचा है, जिसके ऊपर एक विशाल गुंबद है। चारों ओर छोटे टॉवर और जालीदार खिड़कियाँ स्थापत्य की विशेषताएँ हैं। गेट समुद्र की ओर

खुलता है और इसके पीछे सीढ़ियाँ हैं, जो अरब सागर तक जाती हैं। गेट के बगल में प्रसिद्द ताज महल पैलेस होटल स्थित है।

गेटवे ऑफ इंडिया के आसपास पाँच जेटियां हैं, जिनमें से कुछ फेरी के लिए उपयोग होती हैं। यह जगह न केवल ऐतिहासिक महत्व रखती है बल्कि आज भी मुंबईवासियों और पर्यटकों के लिए सांस्कृतिक गतिविधि और मिलन स्थल है।

गेटवे ऑफ इंडिया मुंबई की पहचान बन चुका है। यह स्मारक स्थानीय लोगों के त्योहारों और समारोहों का केंद्र है। यह ब्रिटिश राज की एक भव्य यादगार होने के साथ-साथ आज भारतीय लोकजीवन का अभिन्न हिस्सा है। इसके पास कई बार सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। आज, इसके आसपास अरब सागर की लहरें, बगल में खड़ा ताज महल पैलेस होटल, और देश-विदेश से आए सैलानियों की भीड़ — सब इसे मुंबई का जिंदा प्रतीक बना देते हैं। यह सिर्फ एक पत्थरों का ढांचा नहीं, बल्कि स्वागत, विदाई और आज़ादी की कहानियों का गवाह है।

दिल्ली का इंडिया गेट – वीर सैनिकों को सलाम

मुंबई से हज़ार किलोमीटर दूर, दिल्ली के दिल में खड़ा है इंडिया गेट — वीरता और बलिदान का प्रतीक। इसे प्रथम विश्व युद्ध और अफगान युद्ध में शहीद हुए भारतीय सैनिकों की याद में बनाया गया। निर्माण 1921 में शुरू हुआ और 1931 में पूरा हुआ। प्रसिद्ध वास्तुकार सर एडविन लुटियंस ने इसे एक विशाल रोमन ट्रायम्फल आर्च की तर्ज़ पर डिजाइन किया। लगभग 42 मीटर ऊँचे इस स्मारक पर हजारों शहीद सैनिकों के नाम खुदे हैं।

आज़ादी के बाद यहाँ अमर जवान ज्योति की स्थापना हुई, जहाँ निरंतर जलती लौ शहीदों के बलिदान का संदेश देती रहती है। हर साल गणतंत्र दिवस की परेड यहीं से शुरू होती है, और लाखों लोग यहाँ आकर राष्ट्र के वीरों को श्रद्धांजलि देते हैं।

इंडिया गेट लाल और पीले रंग के पत्थरों से निर्मित है, इसकी ऊँचाई लगभग 42 मीटर है, जो इसे गेटवे ऑफ इंडिया से अधिक विशाल बनाता है। यह दिल्ली के राजपथ के मध्य में स्थित है, जो राष्ट्रीय प्रदर्शनों, विशेष रूप से गणतंत्र दिवस परेड का प्रमुख स्थल है।

इंडिया गेट के आसपास विस्तृत हरे-भरे लॉन हैं, जो नागरिकों और पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय विश्राम स्थल हैं। रात में फव्वारे और लाइटिंग की वजह से इसका सौंदर्य और बढ़ जाता है।

दो द्वार – अलग कहानियाँ, एक गर्व

अगर एक तस्वीर में इन्हें साथ रख दें, तो शायद लगे वे जुड़वां भाई हैं — लेकिन दोनों की आत्मा अलग है।

गेटवे ऑफ इंडिया है — स्वागत का द्वार, समुद्र से जुड़े सफ़रों और आज़ादी के आख़िरी ब्रिटिश प्रस्थान का साक्षी।

इंडिया गेट है — शहीदों के नामों और उनकी अमर गाथाओं का पत्थर पर लिखा दस्तावेज़।

एक पश्चिमी तट पर अरब सागर को निहारता है, तो दूसरा दिल्ली के बीचों-बीच, राष्ट्रपथ की गरिमा बढ़ाता है। एक में विदाई की गूंज है, तो दूसरे में बलिदान की गरिमा।

और इस तरह, भारत के ये दो द्वार हमें याद दिलाते हैं कि चाहे स्वागत हो या विदाई, वीरता हो या आज़ादी — हर पत्थर, हर नक़्श, अपने भीतर एक कहानी समेटे है।

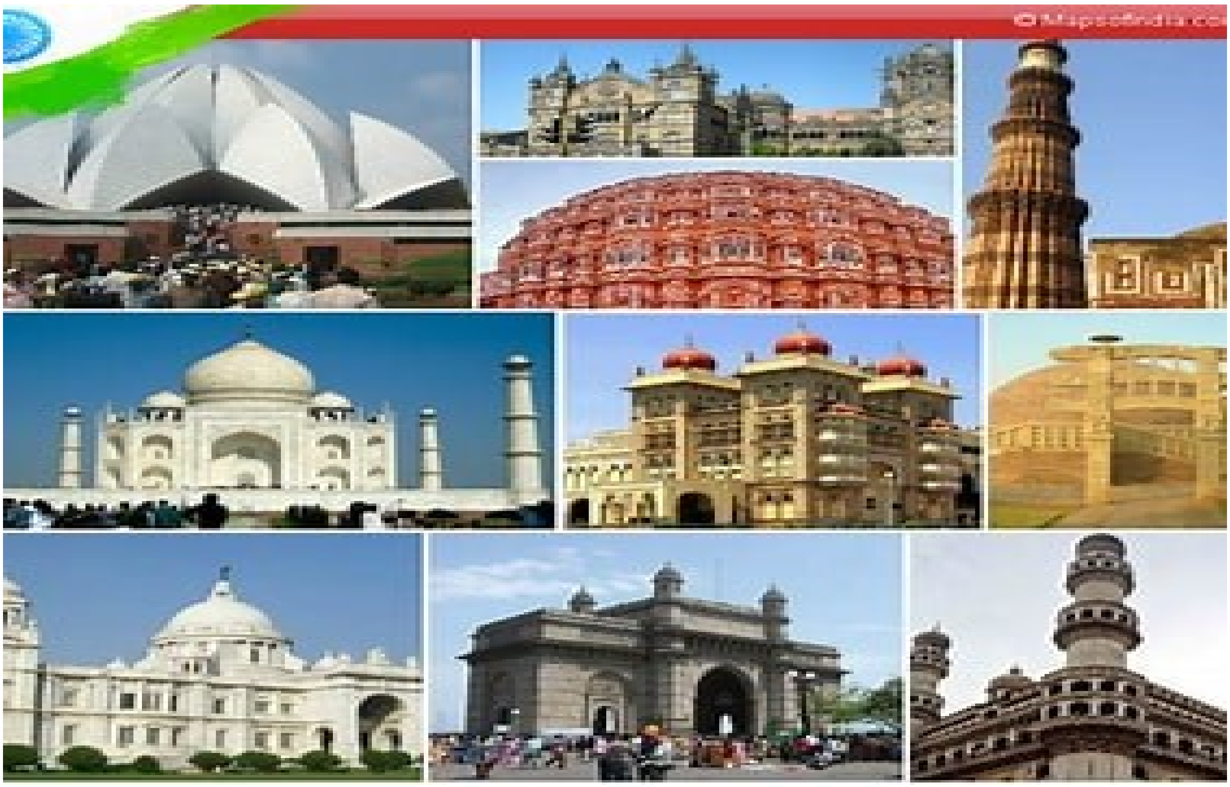

रसायन युक्त भोजन

श्री राहुल मौर्य
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/अहमदाबाद

आज के इस युग में, जब विज्ञान और तकनीक की तरक्की अपने चरम पर है, मानव जीवन अत्यधिक सुविधाजनक हो गया है, वहीं दूसरी ओर इसके कुछ दुष्परिणाम भी हमारे समक्ष उभरकर आए हैं। आज हमारी थाली में जो भोजन परोसा जाता है, वह दिखने में भले ही ताज़ा, पौष्टिक और स्वादिष्ट लगे, लेकिन वह भीतर से रसायनों से भरा होता है। फल, सब्ज़ियाँ, अनाज, दूध, और मांस, जिन्हें हम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक मानते हैं, लगभग हर चीज़ में कीटनाशक, रासायनिक उर्वरक, हॉर्मोन और संरक्षक पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, आम को जल्दी पकाने के लिए कैल्शियम कार्बाइड का प्रयोग किया जाता है, जो एक विषैला रसायन है।

आजकल की खेती में कीटनाशकों, रासायनिक उर्वरकों, प्रिज़रवेटिव्स और हॉर्मोन इंजेक्शनों का अत्यधिक प्रयोग हो रहा है। फलस्वरूप हमारी थाली में आने वाला हर कौर धीरे-धीरे ज़हर में बदलता जा रहा है।

हरित क्रांति के बाद भारत में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई, जिसने देश को खाद्य संकट की स्थिति से निकालकर आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किया। यह क्रांति वैज्ञानिक बीजों, उन्नत किस्मों, सिंचाई की आधुनिक तकनीकों, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर आधारित थी, जिनकी सहायता से बहुत कम समय में अधिक उपज संभव हो सकी। हालांकि, इस क्रांति की चमक के पीछे कई छुपे हुए दुष्परिणाम

भी हैं । रासायनिक खादों और कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से जहाँ एक ओर मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता घटने लगी, वहीं दूसरी ओर भूमिगत जल स्रोतों में प्रदूषण की मात्रा बढ़ गई। इन रसायनों का प्रभाव केवल खेतों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वे खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर गए, जिससे मानव स्वास्थ्य पर भी गंभीर दुष्परिणाम दिखाई देने लगे—जैसे कि त्वचा रोग, श्वसन संबंधी समस्याएं, हार्मोनल असंतुलन आदि बीमारियाँ भी बढ़ने लगीं। इन दीर्घकालिक प्रभावों को संतुलित करने के लिए अब सतत और जैविक कृषि की दिशा में ठोस कदम उठाना आवश्यक है।

बाजार में उपलब्ध अधिकांश फल जैसे केला, आम, पपीता आदि को कृत्रिम रूप से पकाया जाता है। इनमें कैल्शियम कार्बाइड और एथीफॉन जैसी गैसों का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार, टमाटर, गोभी, पालक आदि सब्ज़ियों को समय से पहले बड़ा करने और आकर्षक बनाने के लिए यूरिया और अन्य रसायनों का छिड़काव किया जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, कीटनाशकों और रसायनों के अत्यधिक सेवन से कैंसर, थायरॉइड, हॉर्मोनल असंतुलन, बाँझपन,

त्वचा रोग और मानसिक विकार हो सकते हैं। पंजाब के मालवा क्षेत्र में कैंसर के बढ़ते मामलों को लेकर 'कैंसर ट्रेन' चर्चा में रही है।

रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक न केवल मानव स्वास्थ्य के लिए घातक हैं, बल्कि पर्यावरण के लिए भी नुकसानदायक हैं। ये रसायन भूमि की उर्वरता को समाप्त कर देते हैं और जल स्रोतों को प्रदूषित करते हैं। केरल की 'एंडोसल्फान त्रासदी' इसका ज्वलंत उदाहरण है, जहाँ हजारों लोग प्रभावित हुए।

क्या रसायन युक्त भोजन का कोई विकल्प है......आइये इस पर चर्चा करें

जैविक खेती वह पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग नहीं होता। इसके स्थान पर गोबर, गोमूत्र, नीम का अर्क और वर्मी कम्पोस्ट जैसे प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग किया जाता है। उत्तराखंड, सिक्किम और कर्नाटक के कुछ हिस्सों में यह खेती सफलतापूर्वक की जा रही है। कुछ शहरी लोग अब टेरेस गार्डनिंग, किचन गार्डन और सामूहिक जैविक खेती की ओर बढ़ रहे हैं। बेंगलुरु, पुणे और दिल्ली जैसे शहरों में अनेक परिवार अपनी सब्ज़ियाँ स्वयं उगाते हैं।

भारत सरकार ने 'परंपरागत कृषि विकास योजना', 'राष्ट्रीय जैविक कृषि मिशन' जैसी योजनाएं शुरू की हैं। इनका उद्देश्य किसानों को जैविक खेती के लिए प्रेरित करना और आर्थिक सहायता देना है। साथ ही, FSSAI (भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण) समय-समय पर रसायनों की सीमा तय करता है।

विद्यालय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य करके न केवल भावी पीढ़ियों को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाया जा सकता है , बल्कि उन्हें सतत विकास, प्रदूषण नियंत्रण, जल-संरक्षण, और रसायन-मुक्त जीवनशैली के महत्व को समझने में भी मदद किया जा सकता है। अतः यह आवश्यक है कि सभी विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए और इसे केवल एक विषय तक सीमित न रखकर, जीवनशैली का हिस्सा बनाया जाए।

भविष्य सुरक्षित तभी होगा जब हम अपने वर्तमान भोजन प्रणाली को पुनः विचार करें। यदि हम अब भी नहीं जागे, तो वह दिन दूर नहीं जब हम भोजन के नाम पर केवल ज़हर खा रहे होंगे। समाधान हमारे पास है—ज़रूरत है जागरूकता, इच्छाशक्ति और संयुक्त प्रयास की।

“जहर नहीं अब अन्न में, जीवन का हो सार,
खेती हो जैविक, प्रकृति से हो प्यार।
शुद्ध हवा, निर्मल जल, बचपन मुस्काए,
हर बगिया में फिर से खुशबू फैल जाये”

वाणी

श्री पंकज कुमार
डाटा प्रवष्टि प्रचालक/चर्चगेट

"ऐसी वाणी बोलिए. मन का आपा खोए
और को शीतल करें, आपहु शीतल होए"

कबीरदास जी का यह दोहा न केवल हिंदी साहित्य का एक अमूल्य रत्न है, बल्कि यह जीवन के व्यवहारिक और अध्यात्मिक पक्ष को भी सरल शब्दों में व्यक्त करने वाली एक अमर सीख है। कबीरदास जी कहते है कि वाणी ऐसी होनी चाहिए जिसे बोलते समय अंहकार (मन का आपा) समाप्त हो जाए, और जिसमें इतना मधुर भाव हो कि वह दूसरों के मन को भी शीतल, प्रसन्न और संतुष्ट कर दें। साथ ही साथ,ऐसी वाणी बोलने वाला व्यक्ति स्वयं भी भीतर से शान्ती और सुकून महसूस करें।

विश्व में लगभग 7000 भाषाएं बोली जाती हैं जिनकी आगे कई बोलियां एवं उपबोलिया हैं। भाषा गतिशील होती है और समय के साथ इसमें बदलाव भी आते हैं, जोकि समकालीन जलवायु, व्यापार, शिक्षा का स्तर, खान-पान और पड़ोसी देशों से संबंध जैसे कई पहलुओं से जुड़े होते हैं। ऐसा हो भी क्यों ना आखिर भाषा से ही तो उन सब क्षेत्रों में संपर्क साधा जा सकता है। जिस भाषा में कोई अपनी बात सहजता से कह पाता है वह उस व्यक्ति की विशिष्ट पहचान बन जाती है और ज्यादातर मामलों में यह उस व्यक्ति की मातृभाषा ही होती है। यहां यह बात विचार करने योग्य है कि किन्ही दो व्यक्तियों की भाषा एक समान होते हुए भी एक की वाणी आपको मधुर और दूसरे की कटु प्रतीत होती है। आपने भी स्वयं महसूस किया होगा कि किसी-किसी व्यक्ति की वाणी इतनी प्रभावशाली होती है कि दूसरा व्यक्ति अनायास ही उसकी ओर आकर्षित हो जाता है।
आज की इस आपाधापी वाली जिंदगी में कहां किसी के पास समय है इस पर विचार करने का लेकिन आप अनुभव करेंगे कि लोकल में कभी कभार जब कोई किसी को थोड़ा सा आगे होकर सीट के लिए कहता है और वह भी मधुर वाणी से तो तुरंत सात व्यक्तियों वाली सीट पर आठवें व्यक्ति के लिए जगह बन जाती है। इसी वाणी के इस महत्व को बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी बहुत खूब जानती हैं। इसी कारण स्पष्ट और मधुर वाणी वाले फ्रन्ट डेस्क या कस्टमर केयर सहायक को कार्यभार सौंपा जाता है।
वास्तव में यदि ध्यान से मनन करेंगे तो आप पाएंगे कि सारा झगड़ा ही वाणी का है। आपने लोगों को अक्सर कहते सुना होगा कि उसने मुझे ऐसा बोला, ऐसा कहा, बस फिर क्या था कि झगड़ा शुरु । इसीलिए कहते भी है कि पहले तोलो फिर बोलो, और इस पर भी आप यदि सीधा-सीधा अपने शब्दों से बम ही फोड़ दें तो फिर झगड़ा होगा ही ना। देखिए कितनी अद्भुत बात है कि यदि कोई व्यक्ति आपसे उस भाषा में बात कर रहा है जिसे आप जानते भी नहीं पर उसके हाव-भाव से आपको कुछ-कुछ लग जाता है कि बात अच्छी है या बुरी। इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि वाणी के साथ-साथ भावों का भी उतना ही महत्व है। रहीम का दोहा , "रहिमन मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुं ओर, बिन मीठे मनुष्य ते. बसत नसत दूरी ठौर" भी इसी का समर्थन करता है।
आज के समय में जब जीवन की गति तेज है और तनाव हर किसी का साथी बन चुका है, सकारात्मक और मधुर वाणी समाज में सांमजस्य बनाए रखने के लिए नितांत आवश्यक है। यह हमारे शब्द ही तो हैं जो परिवार में हमारे रिशतों को मजबूत रखते हैं, शालीन और सम्मानजनक भाषा का प्रयोग

कार्यस्थल पर सहयोग और टीम भावना को बढ़ाता है। मृदुभाषी व्यक्ति से लोग सहज ही जुड़ जाते हैं और वह समाज में प्रिय हो जाता है।

भारतीय दर्शन में वाणी को साधना का हिस्सा माना गया है। योग में मौन और मंत्रजप जैसे अभ्यास वाणी को शुद्ध और शक्तिशाली बनाने के लिए सुझाए गए हैं। जब बोलते समय हम अपने मन को शांत रखते हैं, तो हमारी वाणी केवल शब्द नहीं होती, वह स्पंदन बनकर सामने वाले के हृदय को छू जाती है। यही कारण है कि संतों, गुरुओ औऱ मनीषियों के वचन शताब्दियों तक लोगों को प्रेरित करते हैं। शायद कुदरत भी यही चाहती थी तभी तो किसी कवि के शब्द बहुत सार्थक जान पड़ते हैं –

"खुदा को नापंसद थी सख्ती ज़बान में,
इसीलिए ना रखी हड्डी ज़बान में" ,

**"हिंदी और हिन्दुस्तान हमारा है और हम इसकी शान हैं
दिल हमारा एक है और एक हमारी जान है"**

मन के अंदर का महाभारत

श्रीमती नंदिनी कासारे
वरिष्ठ लेखापरीक्षक/वड़ोदरा

देखा जाए तो महाभारत कृष्ण, अर्जुन, कर्ण, द्रौपदी इन पात्रों से भरा ही नहीं है, महाभारत यह हम सबका जीवन ही है।

•आपकी लाचारी भीष्म है, हाथ में सब कुछ होते हुए कुछ न करने की

•आपका निर्णय कर्ण है, गलत है फिर भी सही लगता है।

•आपका अंधा भ्रम धृतराष्ट्र है, जो अच्छा बुरा समझने ही नहीं देता।

•आपकी सर्वोच्च बुद्धि कृष्ण है, कैसे उसका उपयोग करना है खुद निर्धारित करें।

•दु:शासन आपका घमंड है, जिसका अंत निश्चित है।

•पांडव यह आपका आत्मविश्वास है, जो जीवन बिखरने नहीं देता।

•कौरव आपके जीवन का झंझट है, जो अच्छा कभी नहीं सोचने देगा।

•भीम आपकी ताकत है, जो आपको कभी झुकने नहीं देती।

•भीम का पोता बर्बरिक आपका समर्पण है, आपके पास सब होते हुए भी सबके बारे में जानना पड़ता है।

•युधिष्ठिर आपका आत्मसम्मान है, जिसके बिना सब शून्य है।

•शकुनी आपका मन है, जिससे आपकी अच्छी और बुरी वही से उत्पन्न होता है।

•अभिमान वह चक्रव्यूह है जिससे इंसान एकबार इच्छाशक्ति पूर्ण करने घुस जाता है फिर दुबारा उससे निकल नहीं पाता।

•हेडब्या वह प्रयास है, जो सबकुछ पता हो कर भी चुपचाप रहने में खुशी ढूंढ़ने का असफल प्रयास है, जो कभी भी प्रकट नहीं होती।

•कुंती वह याद है, जो बेवक्त सबको भुगतना पड़ती है।

•घटोत्कच सिर्फ खोने का मन है, पाना कुछ नहीं है।

कुरुक्षेत्र यह आपका शरीर है, जिसे इन सब का परिणाम भुगतना पड़ता है।

प्लास्टिक कचरे के निपटान की समस्याएँ

श्री नीरज कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक/वड़ोदरा

प्लास्टिक कचरा आज पूरे विश्व के लिए पर्यावरण और मानव जाति के लिए गंभीर समस्या है। इस कचरे ने आज समुंदर, नदियाँ, भूमि, पहाड़ आदि सभी प्राकृतिक स्थलों को प्रदूषित कर रखा है।

प्लास्टिक कचरा, या प्लास्टिक प्रदूषण, प्लास्टिक की बनी हुई चीजों का संचय है। जैसे प्लास्टिक की बोतलें, पैकेट इत्यादि। प्लास्टिक कचरा पुनः-उपयोग न होने के कारण (रसायनिक) सदियों वर्षों तक पर्यावरण में संचित रहता है तथा नदियों के जल, उपजाऊ भूमि आदि को प्रभावित करता है।

आज पूरे विश्व में मानव जाति की आबादी बढ़ रही है। इस बढ़ती आबादी के कारण सबसे सामने की मांग तेजी से बढ़ती है। प्लास्टिक से निर्मित वस्तुएं जैसे बोतल, थैली, आदि सस्ती होने के कारण लोग इसके उपयोग को अत्यधिक पसंद करने लगे। प्लास्टिक सस्ता तो होता है परंतु इसकी कोई खराबी टिकाऊ नहीं होती है। अतः उपयोग के पश्चात लोग इसे फेंक देते हैं। ये फेंका हुआ प्लास्टिक कचरा न केवल भूमि, जल आदि को कचरा प्रवाहित समुंदर में जाता है। जिससे जलाशयों में मौजूद प्लास्टिक की थैलियाँ, पॉलीथिन समुंदर में इतना कचरा समुंदर में जाने के कारण समुंदरों जीवों के जीवन स्तर पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

प्रति दिन लोगों के घरों से उत्पन्न होने वाला प्लास्टिक कचरा शहरी जीवन के लिए भी एक गंभीर समस्या बना हुआ है। आज बड़े बड़े शहरों में इन कचरों का ठीक तरह से निपटान न करने के कारण जल निकासी के लिए गंभीर समस्या उत्पन्न करती है और बरसात के दिनों में सड़कों पर जल जैसी स्थिति का सामना करना पड़ता है।

अतः प्लास्टिक कचरे से उत्पन्न समस्याओं को देखकर यह आवश्यक हो जाता है कि इसे तुरन्त ही नियंत्रित किया जाए। इसके लिए कुछ जरूरी कदम उठाने की आवश्यकता है। हमें प्लास्टिक के उत्पादन और वितरण पर नियंत्रण रखने का प्रयत्न करना चाहिए। सीमित उपयोग प्लास्टिक उत्पादों का और प्लास्टिक को पुनः उपयोग करना चाहिए। प्लास्टिक कचरे के लिए अलग-अलग कचरा पेटी बनवानी चाहिए जिससे इसका सही से निपटान किया जा सके। सिंगल यूज प्लास्टिक का इस्तेमाल बंद करने से इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

प्लास्टिक के उपयोग को पूरी तरह से बंद नहीं किया जा सकता परंतु उसके नियंत्रण जरूर किया जा सकता है। इसके लिए लोगों को जागरूक करना प्रमुख होगा। प्लास्टिक के बोतलों के स्थान पर अन्य वैकल्पिक चीजों का उपयोग करना शुरू करने चाहिए। उसी तरह प्लास्टिक की थैलियों की जगह कपड़े और कागज की थैलियां इस्तेमाल बढ़ाना चाहिए। प्लास्टिक का उपयोग जितना कम होगा उससे पर्यावरण भी शुद्ध होगा।

बरसात

श्री भारत भूषण
वरिष्ठ अनुवादक/चर्चगेट

वो आसमां से गिरती ,वो फूलों में झरती,
वो लहरों को छूती, समंदर में मिलती,
वो बरसात ही तो है।
तेजी से आती, कभी थम-थम बरसती,
कभी बदरा कारे संग गरजती,
कभी बिजली संग चमकती,
वो बरसात ही तो है।
लोरी दे सुलाती, तो कभी नींद से जगााती,
बिन बताए आती, तो कभी आकर फिर ना जाती,
दिनभर बरसती, तो कभी घड़ीभर ठहरती,
वो बरसात ही तो है।
खेत देखता है, कभी किसान देखता है,
कब से पड़े हैं, करबद्ध खड़े हैं,
झिंगुर पुकारते है, बच्चे निहारते हैं,
वो बरसात ही तो है।
कब मजहब मानती है, सरहद भी ना पहचानती है,रंग रूप से परे है, जाति पाति से बडी है,
वो बरसात ही तो है।
फूलों पर ठिठकती है, पत्तों से फिसलती है,
छन-छन कर तरुओं से गिर रही है,
होले से बिन-आह जमीं को चूमती है,
वो बरसात ही तो है।
अज़र घूमते है, शज़र झूमते है,
बाद़े सबां लहकती है, सहर महकती है,

वो शबनम की बूंदे,
वो बरसात ही तो है।

उमलिंग ला की साइकिल यात्रा

श्री विकास ब्रहमक्षत्रिय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/चर्चगेट

मनुष्य का स्वभाव हमेशा से ही सीमाओं को परखने वाला रहा है। सभ्यता के आरंभ से लेकर आज तक इंसान ने अपने आप से यही प्रश्न किया है—"क्या मैं और आगे जा सकता हूँ?" यही प्रश्न उसे पर्वत शिखरों तक ले गया, समुद्र की गहराइयों में उतारा, आकाश को छूने की प्रेरणा दी और साहसिक खेलों की ओर आकर्षित किया।

हम साहसिक खेल क्यों अपनाते हैं? पर्वतारोहण, लंबी दूरी की दौड़, मुक्केबाज़ी, साइक्लिंग या कोई भी साहसिक खेल—ये सब केवल शारीरिक ताक़त का प्रदर्शन नहीं हैं। ये हमारे मन की दृढ़ता, धैर्य और साहस की परीक्षा हैं। जब शरीर थक जाता है, तब असली खेल शुरू होता है। तब मन पूछता है—"क्या मैं रुक जाऊँ?" और आत्मा उत्तर देती है—"नहीं, आगे बढ़ो।"

कठिन खेल हमें भय से सामना करना सिखाते हैं। डर हर इंसान के भीतर होता है—हार जाने का डर, असफल होने का डर, थक जाने का डर। लेकिन जब हम चुनौतीपूर्ण खेल अपनाते हैं, तो हम सीखते हैं कि डर को हराना संभव है। हर पसीने की बूँद, हर गिरावट, हर चोट हमें और मज़बूत बनाती है।

और अंत में जब हम जीतते हैं, तो वह जीत केवल ट्रॉफ़ी या मेडल की नहीं होती। वह आत्म-विश्वास की होती है। वह हमें यह एहसास कराती है कि इंसान की असली ताक़त मांसपेशियों में नहीं, बल्कि उसके मन की दृढ़ता और आत्मा के अडिग विश्वास में है।

लेह से उमलिंग ला की साइक्लिंग यात्रा

इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर मैंने शुरुआत की लेह से उमलिंग ला पास साइक्लिंग की यात्रा की। यह केवल एक सड़क यात्रा नहीं थी, बल्कि आत्मा की गहराइयों में उतरने वाली यात्रा थी।

कुछ यात्राएँ नक्शे पर दर्ज होती हैं।कुछ स्मृतियों में और कुछ, आत्मा पर अमिट हो जाती हैं।

लेह से निकलते ही पहला अनुभव था हवा की पतलापन। साँस लेना मुश्किल, दिल की धड़कन तेज़ और मन में डर व उत्साह का मिला-जुला भाव। हर पैडल स्ट्रोक मेरे संकल्प की परीक्षा ले रहा था। हर साँस मुझे याद दिला रही थी कि मैं दुनिया की छत की ओर बढ़ रहा हूँ। और हर चढ़ाई मुझे यह दिखा रही थी कि यह यात्रा मांसपेशियों की ताक़त से नहीं, बल्कि मन के साहस से पूरी होगी।

बीहड़ घाटियाँ, मौन रेगिस्तान और हवा से झकझोरते मैदान—इनसे गुज़रते हुए एक-एक पल मेरे भीतर परिवर्तन ला रहा था। जैसे-जैसे ऊँचाई बढ़ी, आत्म-संदेह पीछे छूट गया।
हर किलोमीटर के साथ मैंने बहाने छोड़े और ताक़त को थामा—एक-एक धड़कन के साथ।

और फिर वह क्षण आया—19,024 फीट की ऊँचाई, दुनिया का सबसे ऊँचा मोटरेबल पास, उमलिंग ला। साइकिल से वहाँ पहुँचना केवल शारीरिक उपलब्धि नहीं थी। यह आत्मा का जागरण था। वहाँ खड़े होकर केवल दृश्य ही सांसें नहीं रोकते थे, बल्कि यह अनुभूति भी—कि मैं सक्षम हूँ, मैंने साहस किया, सहा और विजय पाई।

यह यात्रा केवल मेरी नहीं, बल्कि हर उस इंसान की है जो अपनी सीमाओं को तोड़ना चाहता है। उमलिंग ला की सड़क ने मुझे सिखाया कि कठिनाइयाँ हमें रोकने के लिए नहीं होतीं, बल्कि यह दिखाने के लिए होती हैं कि हम कितने मज़बूत हैं।

साहसिक खेल और यात्राएँ हमें अनुशासन देती हैं, धैर्य सिखाती हैं, विनम्र बनाती हैं और भीतर छुपी शक्ति को बाहर लाती हैं। यही वजह है कि इंसान कठिन, साहसिक खेल चुनता है—क्योंकि उनमें हमें जीवन का असली स्वाद मिलता है।

उमलिंग ला की उस सुनसान, गौरवशाली सड़क पर मैंने यही सीखा—
आप केवल दुनिया की चोटी तक नहीं पहुँचते, आप स्वयं की चोटी तक उठते हैं।

"हिन्दी है भारत की आशा
हिन्दी है भारत की भाषा"

राजभाषा पखवाड़ा 2024 समापन कार्यक्रम आयोजन रिपोर्ट

हिंदी दिवस-2024 का शुभारंभ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन से 14 सितम्बर को हुआ। इस बार गृह मंत्रालय के निदेशानुसार 14-15 सितम्बर को दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन, भारत मंडपम (नई दिल्ली) में किया गया जिसमें सभी केंद्रीय कार्यालयों से राजभाषा कार्मिकों ने भाग लिया । हमारे कार्यालय से श्री आभाष कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, श्री आचारिया कुणाल किशोर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी और श्री अशोक बिश्नोई , कनिष्ठ अनुवादक, भी इसमें उपस्थित रहें।

कार्यालय में हिंदी पखवाड़े की प्रतियोगिताओं का शुभारंभ 18 सितम्बर से हुआ। दिनांक 18/09/2024 को मुहावरें, कहावतें एवं प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, दिनांक 19/09/2024 को निबन्ध प्रतियोगिता , दिनांक 20/09/2024 को टिप्पण प्रतियोगिता एवं दिनांक 23/09/2024 को सुलेख प्रतियोगिता और दिनांक 24/09/2024 को हिंदी टंकण प्रतियोगिता आयोजित की गई । पखवाड़े का पुरस्कार वितरण सह हास्य कवि सम्मेलन समारोह दिनांक 27/09/2024 को मुख्यालय/चर्चगेट के सर्वे एवं निर्माण कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आरंभ पूर्वाह्न 10.30 बजे से राजभाषा कार्यशाला सह प्रश्नोत्तरी का आयोजन कर किया गया जिसमें प्रत्येक सही उत्तर देने वाले प्रतिभागी को एक उपहार प्रोत्साहन के रुप में दिया गया। इसके बाद हास्य कवि सम्मेलन के लिए आमंत्रित अतिथि हास्य कवि श्री जय राम सिंह जी ने अपने हास्य की फुहार बिखेरते हुए उपस्थित सभी कार्मिकों का मनोरंजन किया।

अपराह्न 12.45 बजे मुख्य कार्यक्रम शुरु हुआ। इस अवसर पर शाखा कार्यालयों के विजेता कार्मिक भी उपस्थित रहें। इस कार्यक्रम की शुरुआत माननीय प्रधान निदेशक महोदया द्वारा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, श्री अशोक कुमार मिश्र, महाप्रबंधक, पश्चिम रेलवे, को आदर सूचक उपहार भेंट करके की गई । इस अवसर पर मुख्य वित्त सलाहकार, श्री शालिनी दरबारी भी उपस्थित रहीं। इसके पश्चात दीप प्रज्जवलन और सुश्री साक्षी सोलंकी के सरस्वती वंदना गायन के साथ, परम्परागत रुप से, कार्यक्रम का श्री गणेश हुआ। तदुपरांत, श्री आचारिया कुणाल किशोर,सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी एवं श्री भारत भूषण, वरिष्ठ अनुवादक द्वारा कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया । कार्यक्रम के अगले चरण में महाप्रबंधक और प्रधान निदेशक महोदया ने अपने कर कमलों से हिंदी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए । कुल 21 प्रतिभागियों ने अलग-अलग श्रेणियों में पुरस्कार प्राप्त किए । इसके पश्चात मुख्य अतिथि महोदय द्वारा हिंदी गृह-पत्रिका ‘अभिव्यक्ति’ के 52वें अंक का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि

महोदय और प्रधान निदेशक महोदया ने पत्रिका की सराहना करते हुए पत्रिका संपादन में योगदान देने वाले सभी कार्मिकों को बधाई दी।
अपने संबोधन में मुख्य अतिथि, महाप्रबंधक महोदय, ने सभी कार्मिकों को हिंदी भाषा की सहजता बताते हुए अपने दैनिक काम-काज में इसका अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करने पर बल दिया और प्रधान निदेशक महोदया ने सभी को अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करने के प्रति सचेत किया । अंत में निदेशक/मुख्यालय द्वारा धन्यवाद ज्ञापन देकर आभार प्रकट करते हुए इस कार्यक्रम का समापन किया गया। इस कार्यक्रम से सभी कार्मिकों में हिंदी के प्रयोग के प्रति नवऊर्जा व उमंग का संचार हुआ जिससे इस आयोजन का अभिप्रेत लक्ष्य पूर्ण हुआ।

हिंदी सिर्फ हमारी भाषा नहीं है हमारी पहचान भी है, तो आइए हिंदी बोलें, हिंदी सिखें और हिंदी सिखाएं।

राजभाषा पखवाड़ा - 2024 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम

हिन्दी मुहावरे, कहावतें एवं प्रशासनिक शब्दाबली प्रतियोगिता

क्र. स.	नाम	स्थान
1	श्री शशिभूषण सिंह, वलेपअ	प्रथम
2	श्री हिमांशु, सलेपअ	द्वितीय
3	श्री एन.जी.पडवेकर, वलेपअ	तृतीय

निबंध प्रतियोगिता (प्रवीणता प्राप्त प्रतिभागियों के लिए)

क्र. स.	नाम	स्थान
1	श्री कमलेश कुमार, लेखापरीक्षक	प्रथम
2	श्री राहुल गोयल, सलेपअ	द्वितीय
3	सुश्री सुनिता ढोड़मणी,लेखापरीक्षक	तृतीय

निबंध प्रतियोगिता (कार्यसाधक प्रतिभागियों के लिए)

क्र. स.	नाम	स्थान
1	श्री विकास ब्रहमक्षत्रिय, सलेपअ	प्रथम
2	श्री रोहन कटियार, लेखापरीक्षक	द्वितीय
3	सुश्री साक्षी सोलंकी, सलेपअ	तृतीय

सुलेख प्रतियोगिता

क्र. स.	नाम	स्थान
1	श्री रवीन्द्र भाऊ ठोसरे, लेखापरीक्षक	प्रथम
2	सुश्री श्रुति अरोड़ा, आशुलिपिक	द्वितीय
3	श्री तीरथ कुमार, एम.टी.एस	तृतीय

टिप्पण प्रतियोगिता

क्र. स.	नाम	स्थान
1	श्री आचारिया कुणाल किशोर, सलेपअ	प्रथम
2	सुश्री शिल्पी अग्रवाल, सलेपअ	द्वितीय
3	श्री नारायण राठौर, लेखापरीक्षक	तृतीय

टंकण प्रतियोगिता

क्र. स.	नाम	स्थान
1	श्री अंकित कुमार, डीईओ	प्रथम
2	श्री जयप्रकाश, आशुलिपिक	द्वितीय
3	श्री राहुल मौर्य, सलेपअ	तृतीय

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह

50

(1975-2025)

राजभाषा – भारतीयभाषाणां मैत्रीसूत्रम्

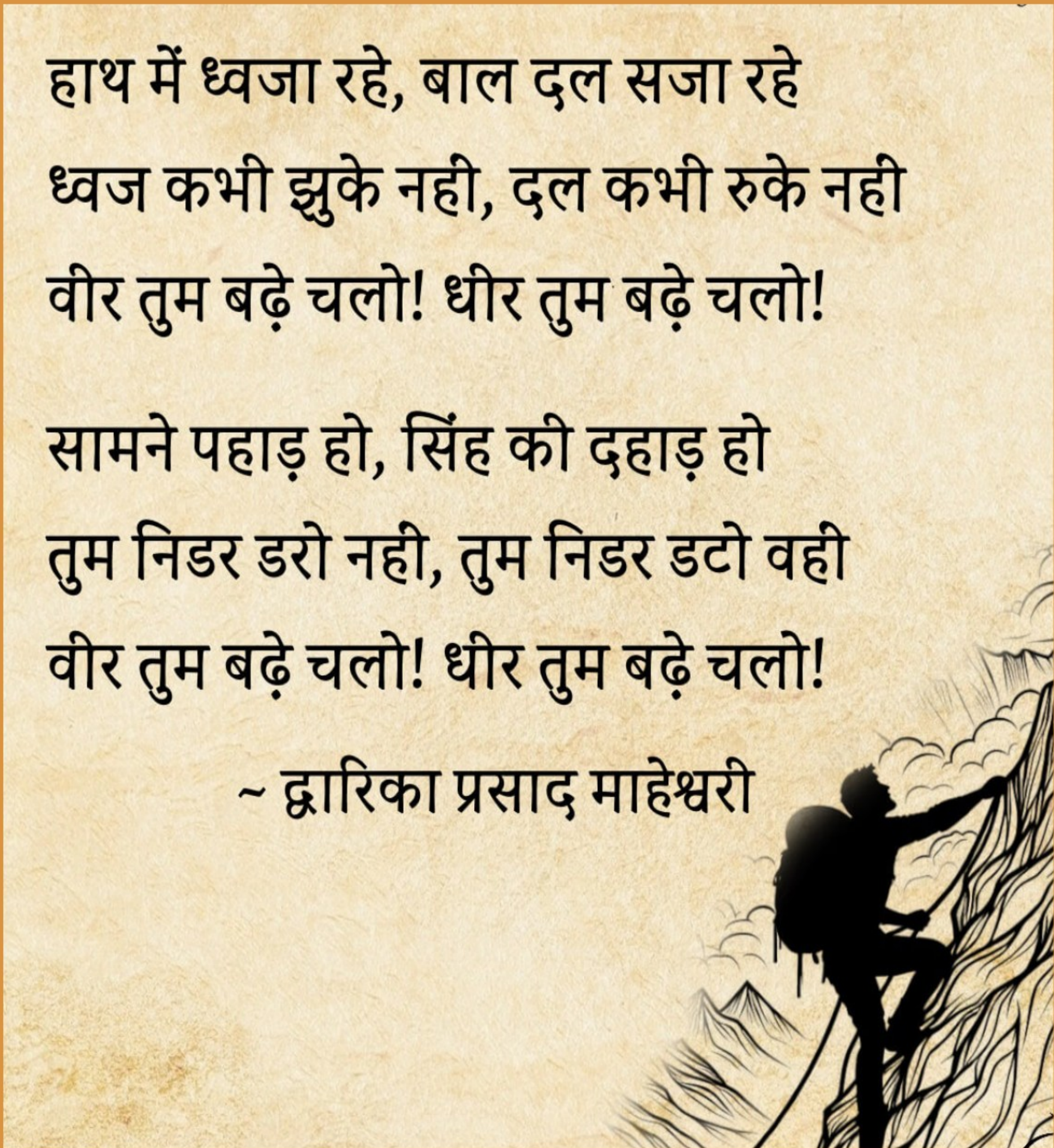

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पश्चिम रेलवे, मुंबई - 400020